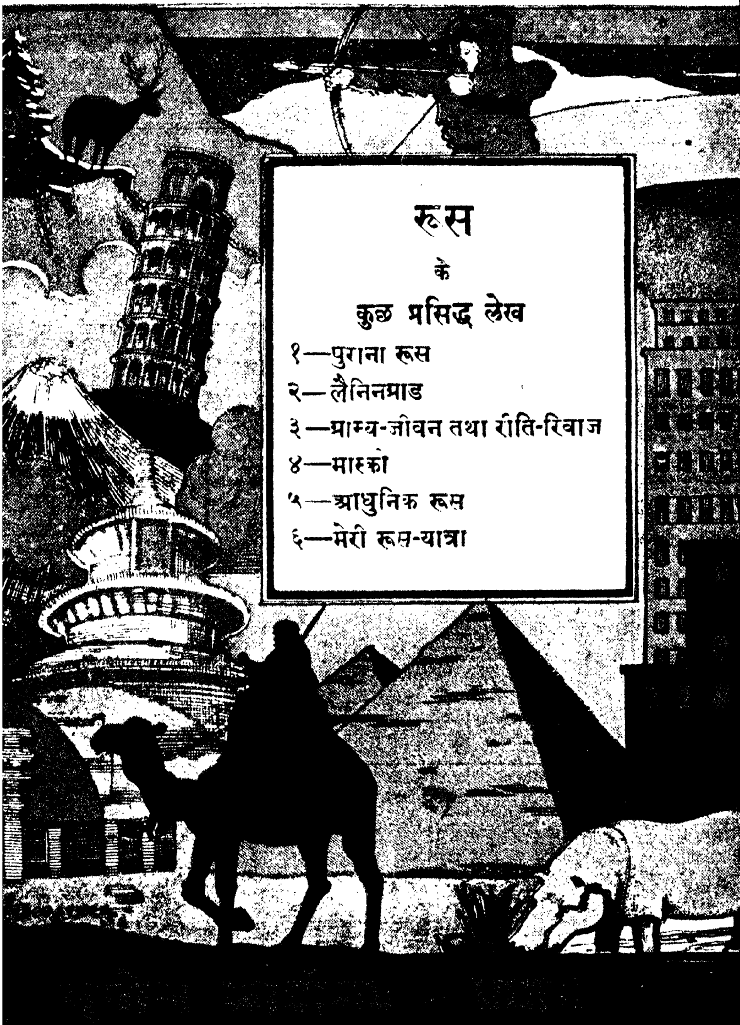
देश दर्शन

रूस



रूस
के
कुछ प्रसिद्ध लेख

फरवरी १९४१] # देश-दर्शन [फाल्गुन १९९७

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष २] रूस [संख्या ८

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
This Copy As -/6/-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का ।=)

विषय-सूची

पुराना रूस

रूस की एक कहावत है। आकाश ऊँचा है और ज़ार बहुत दूर है। यह कहावत सर्वथा सत्य है क्योंकि रूस देश बहुत बड़ा है। उसका यूराल पर्वत जर्मन सीमा से २००० मील दूर है। यह पर्वत रूस और एशिया के मध्य में है। एशियाई रूस की सीमा और भी अधिक दूर है।

रूस में रेलें चारों ओर फैली हुई हैं। परन्तु उसके पूर्व अथवा पश्चिम में कोई समुद्र नहीं है। जब लेनिनग्राड से मास्को को प्रथम रेलवे लाइन बनाई गई थी तो रूसी अफसरों में उसके मार्ग के सम्बन्ध में बड़ा वादाविवाद हुआ था। कुछ लोग राई उगाने वाले प्रदेश में होकर ले जाना चाहते थे और कुछ इसको सन वाले प्रदेश से ले जाना चाहते थे। जब गमनागमन के मार्ग का रूसी मंत्री प्रस्तावित रेलवे लाइन का मानचित्र लेकर ज़ार के पास गया तो ज़ार ने कहा कि रूस में मुझे छोड़कर दूसरा कोई ईमानदार आदमी नहीं है। उसने एक रूल उठाकर लेनिनग्राड से मास्को तक सीधी रेखा

खींच दी। यह लाइन ४०० मील लम्बी है और बनों में होकर जाती है। इस रेलवे लाइन पर केवल ट्वेर एक नगर है ज़ार स्वेच्छाचारी राजा था, रूस का कोई भी व्यक्ति उसकी आज्ञा नहीं टाल सकता था।

रूस की रेल गाड़ियां आनन्द दायक परन्तु चलने वाली हैं। लेनिनग्राड मास्को लाइन को पार करने में उन्हें १२ घंटे लगते हैं। वह लम्बी होती हैं और उनके डिब्बे हमारे यहां के डिब्बों से अधिक चौड़े होते हैं। एक डिब्बे में चार से छः आदमी तक बैठ सकते हैं इस लिये डिब्बों में बैठने के लिये बहुत जगह रहती है। रात के समय रेलगाड़ी के डिब्बों में लेटने के लिये जो स्थान होते हैं वह गिरा दिये जाते हैं। उन पर बड़े से बड़ा आदमी आनन्द के साथ लेट सकता है। तीसरे दर्जे के डिब्बों में बरामदे में भी सीटें लगी रहती हैं। प्रथम श्रेणी के डिब्बों में द्वार लगे रहते हैं और वह कई भागों में बँटे रहते हैं।

रूसी रेलगाड़ियों के डिब्बों के अन्दर लोग बहुत बात चीत करते हैं और गद्देदार विस्तर तथा सुन्दर तकिया होने पर भी नींद लेना कठिन हो जाता है। जब लोग डिब्बों में घुसते हैं तो उन्हें अपने सन्दूकों तथा



सामानों को रखने में बड़ा समय लगता है। डिब्बों में रोशनी बहुत धीमी रहती है। इसलिये वह सामान रखने में कभी कभी कुछ लोग गिर पड़ते हैं। सामान ठीक करने के बाद लोग रात को आराम करने के लिये अपना विस्तर ठीक करते हैं। तीसरे दर्जे में बैठने वाले रूसी यात्री अपने साथ चाय तथा चाप तयार करने के बर्तन भी ले जाते हैं और वह वहाँ पर चाय तयार करते हैं। वह लोग अपने पास मोमबत्ती भी रखते हैं।

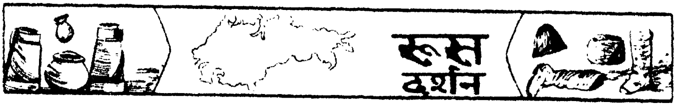
पहले रूसी रेलगाड़ियों में गरीब किसान लोग बहुधा बिना टिकट यात्रा करने वालों को ढूंढते रहते थे और उनका पता लगा कर आगे आने वाले स्टेशन पर उतार देते थे।

जब गार्ड टिकट लेने के लिये डिब्बे के भीतर घुसता था तो वह प्रत्येक मनुष्य को जगा जगा कर टिकट देखता था। वह जिस प्रकार चाहता जगाता। गरीबों के साथ तो वह और भी अधिक निर्दयता कतार गरीब किसान (बिना टिकट वाले) सीठों के नीचे छिप जाते। कभी कभी जगाने और टिकट की खोज में बड़ी हलचल मच जाती और पुलिस को वहां आकर सभों का बयान लिख कर रिपोर्ट करनी पड़ती।

रिपोर्ट का क्या हाल होता यह बतलाना कठिन है। लेकिन अब दशा एकदम बदल गई है।

डिब्बों में लोग एक दूसरे के साथ खूब बात चीत करते हैं। लोग एक दूसरे पर ताना मारते हैं। पादरी या साधु को सीधे रूप में ही लोग कह बैठते कि तुम किसी काम के नहीं हो। तुम अपनी रोटी नहीं कमाते हो और भीक पर ही अपना जीवन चलाते हो। पादरी अथवा साधु अपनी शक्ति के अनुसार उनसे वादा-विवाद करता। कभी कभी लोग कह बैठते कि तुम झूठ बोलते हो। लेकिन अब रूस में पादरी नहीं मिलते।

रूसी लोग अँग्रेज़ अथवा किसी दूसरे परदेशी मनुष्य पर भी ताना कसे बिना नहीं रहते। यदि उन्हें कोई अजनबी चुप बैठा हुआ मिलता है तो वह उससे कहते हैं "क्या तुम्हें "छोटे पिता कुछ हुआ है"। रूसी लोग दूसरे से बात चीत करते समय उसे छोटे पिता कह कर ही बात चीत करते हैं। "क्या तुमको बीमारी हो गई है जो बात चीत नहीं करते यदि बीमारी हुई है तो फिर मरहम पट्टी क्यों नहीं करते हो"।



प्रथम श्रेणी के रेल के डिब्बे बड़े सुखद होते हैं और छोटे कमरों में स्पिरिंगदार गद्दियां रहती हैं। गाड़ियां इतनी लम्बी होती हैं कि डिब्बों में एक अनोखे प्रकार की झूम होती है जिससे समुद्री बीमारी (चक्कर तथा मितली वाली) हो जाती है। गाड़ियों की चाल बड़ी धीमी होती है। इसी कारण दुर्घटनायें भी बहुत कम होती हैं। स्टेशनों पर गाड़ियां बहुत समय तक रुकती हैं। जब तक अगले स्टेशन से तार द्वारा मार्ग साफ होने की सूचना नहीं प्राप्त हो जाती है तब तक गाड़ी स्टेशन को नहीं छोड़ती है। यदि जल्द बाज़ यात्री पूछता है कि गाड़ी कब छूटेगी तो उसे "सी टिचाज़" शीघ्र ही उत्तर मिलता है। रूसी लोग शान्ति पूर्वक गाड़ी छूटने की बाट जोहते रहते हैं और अपने समीप वाले जल्द बाज विदेशी यात्री को बात चीत में फँसाये रहते हैं और कहते हैं कि "निचेओ" कोई परवाह नहीं है। रूसी लोगों की पहचान "निचेओ" शब्द से की जाती है। यह शब्द रूसी बहुधा और कई अर्थों में प्रयोग करते हैं।

देश दर्शन

लैनिनग्राड और मास्को नगरों को छोड़कर बहुत कम नगर रूस में हैं। बड़ी सड़कें बहुधा दलदली भूमि की भांति रहती है और कूड़ा कर्कट तथा छिद्रों से भरी रहती थीं। उसमें ऊँचे नीचे पत्थर के रोड़े भी रहते थे जिन्हें देखकर यात्री लोग बड़े अचरज में पड़ जाते थे। आजकल वहां बड़ी सफाई है।

नगर के स्टेशनों के बाहर "ड्रास्कीज़" गाड़ियाँ खड़ी रहती थी। इन गाड़ियों में एक छोटा घोड़ा जोता जाता है। यात्री को देखकर प्रत्येक गाड़ी को चलाने वाले उसे अपनी गाड़ी पर किराये पर चढ़ाने के लिये उतावला हो जाता था। गाड़ियां इतनी छोटी होती थी कि एक गाड़ी में एक यात्री और उसके सामान का समावेश नहीं हो सकता था। वह अपना सामान एक गाड़ी पर रखता और स्वयंम् दूसरी गाड़ी पर बैठता। दूसरे गाड़ी वान जिन्हें सवारी नहीं मिलती वह मारे कोप के गाली बकने लग जाते और कभी कभी तो वे यात्री के कोचवान की पीठ पर कोड़ा तक जमा देते हैं। कोचवान बड़ा मोटा कोट पहिने रहते। इसलिये उनकी पीठ पर कोड़े की चोट बिलकुल नहीं लगती। यदि यात्री अपने कोचवान का



ध्यान उसकी पीठ पर धीरे से हाथ रख कर बटाना चाहता तो भी वह न देता। अब वहां सुन्दर मोटरें चलती हैं।

जब कोचवान गाड़ी हांकने को होता है तो वह यात्री को शिक्षा देता कि ईश्वर के लिये मज़बूती के साथ पकड़े रहना। यह बात यात्री के लिये बड़े लाभ की होती थी क्योंकि पीठ के ऊपर मनुष्य को गिरने से रोकने के लिये किसी प्रकार की रुकावट नहीं रहती थी। मनुष्य का शरीर हर समय इधर उधर हिलता ही रहता फिर गाड़ी एकाएक रुक जाती है और फिर एकाएक चलने लगती। गाड़ीवान शायद ही कभी अपने घोड़े को मारता। वह उससे हर समय बातें करता रहता वह घोड़े को अपनी जिह्वा तथा लगाम के संकेत से चलाता। यह लगाम कड़ी कर दी जाती है तो वह धीरे तथा ढीली कर देने पर तेज़ी से चलने लगता। गाड़ीवान घोड़े को चलाने के लिये भांति भांति के शब्द प्रयोग करता। वह उसे "मेरा भाई, मेरा मित्र, मेरा छोटा पिता, मेरा प्रेमी, बहादुर, होशियार" आदि शब्द प्रयोग करता है। वह उसे हर समय होशियार रहने के लिये भी सचेत करता रहता था।

कोचवान पैदल चलने वालों को ज़ोरों से आवाज़ देकर मार्ग से हटने के लिये कहता । यदि गाड़ी पैदल चलने वाले के ऊपर चढ़ जाने को होती है तो कोचवान उसे कोड़ा मार कर अलग हटा देता और फिर "निचेश्रो" कह देता ।

बहुधा ऐसा होता कि जब कोई परदेशी किसी नगर के स्टेशन पर उतरता तो वह यह समझता रहता कि वह नगर से काफी दूर रहता था । कभी कभी ड्रस्की गाड़ियां नहीं रहती तो फिर उस दशा में फिनिश कार्ट (गाड़ी) पर ही यात्रा करनी पड़ती ।

गाड़ियों में घास फूस की बैठकें बनी रहती । उनमें गद्दी नहीं बनी रहती थी । गाड़ी का तांगा बहुधा पुराना होता था और रस्सी द्वारा उसके भाग एक दूसरे से बंधे रहते थे ।

रूस की समस्त यात्रा रेल द्वारा नहीं की जा सकती है। पहले वहाँ पर इम्पीरियल पोस्ट (भेजने) का नियम था । इम्पीरियल पोस्ट में विदेशी को एक बड़ा कागज़ निकलता था । इसमें यात्रा के जाने-आने आदि के सम्बन्ध में बहुत सी बातें लिखी रहती थी । इस कागज़ के लिये कुछ दाम

देना पड़ता था। रूस में कोई भी सरकारी वस्तु बिना दाम के नहीं प्राप्त हो सकती। कागज़ को लेकर यात्री को पोस्ट-स्टेशन पर जाना पड़ता और उसे वहाँ पर अपनी गाड़ी तथा घोड़े की मांग करनी पड़ती। तारन्तस गाड़ियों में दो घोड़े जोते जाते हैं। यह घोड़े लगाम द्वारा ही चलते थे। इसमें गद्दी नहीं बनी रहती है। घोड़े अपना सिर नीचे कर के चलते थे जिससे वह कोचवान को देखते रहते थे और जैसे ही उसका हाथ उठता वह अपनी चाल बढ़ा देते थे।

बाहरी ज़िलों में फिनिश गाड़ियां तारंतस गाड़ियों के स्थान पर चलती थीं। इन गाड़ियों की छत की ठोकर बहुधा सिर में लगती थी क्योंकि मार्ग ठीक न होने से मनुष्य का शरीर हिलता रहता है। पोस्ट-स्टेशनों के मध्य में दस से बीस मील तक का अन्तर रहता था। यदि यात्री जल्दी करता तो कोचवान उसे "निचेओ" कह कर रोक देता।

पोस्ट-स्टेशन पर रात व्यतीत करने में बड़ा कष्ट उठाना पड़ता था। वहां पर केवल एक कमरा रहता था और सभी यात्री आते जाते तथा और घोड़ों के

बदलने की प्रतिज्ञा करते तथा चाय की मांग करते रहते थे।

रूसी लोग चाय को बहुत पसंद करते हैं। जाड़े के दिनों में यात्री लोग गाड़ी रुकने के पहले ही चाय की माँग करते हैं। रूसी लोग चाय अपने साथ लेकर चलते हैं उन्हें केवल गरम पानी की ही आवश्यकता होती है। रूसी लोग चाय में दूध का प्रयोग नहीं करते हैं। उनकी चाय अधिक स्वादिष्ट होती है।

पोस्ट स्टेशन पर मनुष्यों को आराम करने के लिये लकड़ी की बेंच रहती हैं या फर्श पर घास आदि बिछी रहती है। वहाँ पर कीड़े बहुत होते हैं वह सोने में बड़े बाधक होते हैं और लोगों को काटते रहते हैं।

रूसी होटलों के कमरों में सभी प्रकार का सामान रहता है। पहले होटलों में चारपाइयां आदि शून्य रक्खी जाती थीं और यात्री को स्वयम् अपना विस्तर आदि रखना पड़ता था। उस समय धनी रूसी लोग अपने साथ नौकर चाकर तथा घोड़े आदि लेकर अपना सभी सामान लेकर चला करते थे। जब से गुलाम स्वतंत्र कर दिये गये और रेलों की अधिकता हो गई है

तब से होटलों में अधिक प्रबन्ध हो गया है फिर भी प्रत्येक होटल निवासी को गाइड आदि के लिये अलग से किराया देना पड़ता है।

रूस के देहात की सड़कें बड़ी गन्दी तथा खराब होती थीं। उनकी मरम्मत नहीं की जाती। जब सड़क पर इतना अधिक कूड़ा कर्कट एकत्रित हो जाता कि गाड़ियां नहीं चल सकतीं तो सड़क के दाहिनी अथवा बाईं ओर दूसरी लीक बना ली जाती इस प्रकार सड़क की चौड़ाई अधिक होती जाती जब तक किसी हरे खेत का लकड़ी का बना बाड़ा मार्ग में नहीं आ जाता था।

सड़कों के मार्ग में जब कोई नदी पड़ती है तो उसके पार करने में बड़ा तमाशा होता है। लोग पुल के ऊपर होकर पार करना नहीं पसंद करते हैं वह छिछले भाग में होकर या किसी दूसरी प्रकार पार करने का प्रयत्न करते। कोचवान अपनी गाड़ी को पुल पर से बड़ी कठिनाई के साथ ले जाता। लम्बे पेड़ों के तनों को नदी के पार रख कर पुल तयार किया जाता तनों के ऊपर लकड़ी के छोटे छोटे टुकड़े डाल दिये जाते। वह एक दूसरे

से जुड़े नहीं रहते इस कारण उनके मध्य बड़े बड़े छेद हो जाते थे। यदि यह बातें कोचवान से कही जातीं तो वह शीघ्र ही उत्तर देता "परवाह मत करो ईश्वर स्वयं हमारी परवाह करेगा"। इस प्रकार गाड़ी के पहिये छिद्रों में गिरते परते पुल पार करते। बड़ी कठिनता से गाड़ी पुल पार करके दूसरी ओर जल में पहुँचती। यदि पहिया या कोई दूसरी वस्तु टूट जाती तो वह डोरी से बाँध दी जाती थी।





लैनिन ग्राड

रूस देश की दो राजधानियाँ हो चुकी हैं। आज कल फिर पुरानी राजधानी मास्को है। लैनिनग्राड या सेंट पीटर्स बर्ग नवीन राजधानी के नाम से प्रसिद्ध है। संसार के और दूसरे बड़े नगरों की भांति मास्को नगर भी प्राकृतिक रूप से बढ़ा है। सेंट पीटर्स बर्ग या लैनिनग्राड बनाया हुआ नगर है। इस नगर को बाल्टिक सागर पर बड़े पीटर ने बसाया था। वह समुद्र पर राजधानी बना कर पश्चिमी सभ्यता से अपना नाता जोड़ना चाहता था। नेवा के नम तथा दलदली भूमि में पीटर ने जहाज़ी बेड़ा तथा नगर बनाना आरम्भ किया था। पीटर ने सभी कठिनाइयों का सामना किया और उसने वहां का पानी साफ किया।

१७०३ ई० में पीटर ने नेवा के एक द्वीप पर किला बनाने का काम आरम्भ किया। यह किला पहले लकड़ी का और फिर पत्थर का बनाया गया। रूस के बनों में लकड़ी तो बहुत थी परन्तु वहां पत्थर की बड़ी कमी थी। इसलिये पीटर ने आज्ञा निकाली कि जो जहाज़

नेवा आवे वह पत्थर लेकर आवे और जो किसानों की गाड़ियां वहां आवें उनमें कुछ न कुछ पत्थर अवश्य ले जाया जावे। चोर तथा हत्यारे लोग सेंट पीटर्स बर्ग में काम करने के लिये भेजे जाते थे। वह कीलों और हाथ की सहायता से मिट्टी निकालते थे और अपनी कमीज़ों में मिट्टी रखकर ले जाते थे।

१७१० ई० तक वहां एक चर्च तयार होने के पश्चात् पीटर ने अपने रहने के लिये एक घर बनाया और प्रत्येक रूसी सरदार तथा मास्को के व्यापारी को आज्ञा दी कि वह भी वहां पर अपना घर बनावे।

पीटर का नगर बहुत जल्द बढ़ गया और वहां पर सौ बर्ष से अधिक प्राचीन वस्तुएँ देखने के लिये नहीं दिखाई पड़ती हैं। वहाँ की सड़कें बड़ी और चौड़ी हैं। चौरास्ते भी बहुत बड़े हैं। वहाँ का विंटर पैलेस (हेमन्त-महल) बहुत बड़ा तथा विशाल है। उसके ऊपर एक उपनिवेश सा बसा हुआ है। कहा जाता है कि इस महल का निचला भाग प्राचीन है और उसका पता किसी भी रूसी व्यक्ति को नहीं था। कहते हैं कि जो लोग इस महल के ऊपर थे वह जलते गर्म लोहे के



गोले पानी में गिराते थे जिससे पानी जमने नहीं पाता था। यह लोग पशु पक्षियों को लाकर चिमनियों के मध्य बस गये। वहाँ पर जो घास उगी उसी से उन्होंने अपने पशुओं का पालन पोषण किया। फिर कहते हैं कि वहां कुछ गायें आ गईं परन्तु यह पता नहीं कि गायें कैसे वहाँ पहुँचीं। उसके बाद उस उपनिवेश का पता चला और वह उतारे गये।

वहां की मुख्य सड़कों पर वृक्षों की दो कतारें लगी हैं और उन्हें प्रास्पेक्ट कहते हैं। नेव्स्की प्रास्पेक्ट सबसे अधिक प्रसिद्ध है। वहाँ की छोटी सड़कें भी दूसरे देशों की बड़ी सड़कों से अधिक चौड़ी हैं।

सड़क की चौड़ाई तथा मकानों की दीर्घता के कारण सड़कों पर चलने में प्रायः थकावट सी प्रतीत होने लगती है। सड़कों के तीन भवनों को पार करने में पैदल चलने वाले को प्रायः ३० मिनट लग जाते हैं। सड़कों पर बहुत कम स्त्रियाँ तथा लड़कियाँ दिखलाई पड़ती हैं। गाड़ियां दरजनों अड्डों पर खड़ी दिखाई पड़ती हैं। पहले वह सवारियों के लिये चिल्लाती रहती। इस्वो-स्टनिक (गाड़ियों के संचालक) अपने मुख्य अड्डों पर

ही मिलते थे। वह अपने गाड़ियों में ही दिन भर रहते और रात को भी उसी में आराम करते थे। उन्हें गरमी अथवा शीत की परवाह नहीं होती थी। गाड़ीवान तथा घोड़े सड़कों पर ही अपना भोजन करते थे। घोड़ों के प्रबन्ध के लिये प्रबन्धकर्ता होते थे। दूकानों पर घोड़ों के लिये घास छोटे छोटे बंडलों में बंधी बिकती थी। एक बंडल घास एक घोड़े के लिये काफी होती। गाड़ीवान क्वास (एक प्रकार की हल्की शराब) चाय और रोटी खाते थे। रूसी लड़के १२ साल की अवस्था से ही गाड़ी चलाने का काम करने लगते थे। पहले वह किराये पर काम करते थे और फिर अपना निजी घोड़ा तथा गाड़ी खरीद कर चलाने लगते। गाड़ीवानों को यदि किसी नगर में घास आदि महँगी दिखाई पड़ती तो वह उसे छोड़ दूसरे, फिर तीसरे नगर को चले जाते थे। जब तक उन्हें उनकी आवश्यकता की पूर्ति करने वाला नगर नहीं मिलता वह चलते ही रहते। योरुप के दूसरे देश के लोग इतना अधिक भ्रमण नहीं करते जितना कि रुसी लोग करते हैं। गरीब लोगों के लिये बिजली द्वारा ट्रेम तथा स्ली गाड़ियाँ चलने लगी हैं।

नेव्स्की प्रास्पेक्ट लैनिनग्रेड की सबसे गुनजान सड़क है। जिस स्थान से यह सड़क आरम्भ होती है वहां पर



लेनिनग्रेड का एडमिरेल्टी हाउस (जलसेना की इमारत)

एक बड़ा विशाल भवन है। इस भवन का दृश्य बड़ा ही

विशाल है। गर्मी के दिनों में सड़क पर बड़ी धूल रहती है इसलिये लोग नगर को छोड़ कर देहात चले जाते हैं परन्तु जाड़े के दिनों में सड़कों पर मनुष्यों तथा स्लेज गाड़ियों की बड़ी भीड़ रहती है। संसार के किसी भी नगर में लैनिनग्रेड से अधिक विविध भेष मिलने कठिन हैं।

रूस में अफसरों की संख्या बहुत थी। वहां पदों की भी बड़ी अधिकता थी। अफसरों को चिनोंनिवस कहते थे। सरकारी नौकरों का अपना अपना अलग निजी ग्रेड (पद) होते थे। पासपोर्ट का निरीक्षण करने वाले टिकट बेंचने वाले तथा पुलीस में रिपोर्ट की हुई बात की जांच करने वाले लोग सबसे नीचे पद के अफसर माने जाते थे। रूस में प्रत्येक भ्रमण करने वाले (परदेशी या रुसी) को पासपोर्ट लेना पड़ता है।

पांचवें और छठवें पद के ऊपर वाले अफसरों की गणना प्रथम श्रेणी में होती थी। सैनिक उपाधि लोगों को बहुत दी जाती थी। कुछ समय बीते मास्को के एक प्रोफेसर को जनरल का पद प्रदान किया गया था। अधिकार के रूप में श्रीमान् हुजूर



का शब्द नवें तथा दसवें पद से ऊपर वाले अफसरों के लिये प्रयोग होता था। परन्तु मामूली तौर पर यह शब्द प्रत्येक रूसी के लिये प्रयोग होता है। जिस प्रकार हमारे यहां श्रीमान् या जनाब (मिस्टर) का शब्द प्रयोग होता है उसी प्रकार रूस में श्रीमान् का शब्द प्रयोग किया जाता है। विश्वविद्यालय का प्रत्येक ग्रेजुवेट (बी० ए० पास) बड़ा माना जाता था। राजा या नवाब के प्रत्येक लड़के को 'प्रिन्स' राजकुमार कहते थे। प्रत्येक या प्रथम श्रेणी के व्यक्ति को दरबार में जाने की आज्ञा थी। परन्तु बहुत कम लोग दरबार में जाते थे। नोबुल को रूसी भाषा में 'द्वारियानिन' कहते हैं।

रूस में अफसरों की इतनी अधिकता थी कि वह प्रत्येक काम में दखल देने का प्रयत्न करते थे। उनका वेतन बहुत कम होता था। वह योरुपीय लोगों में सबसे अधिक रिश्वत लेने वाले गिने जाते थे। यदि काल पड़ने पर किसी प्रान्त के लिये चंदा एकत्रित किया जाता था तो वह इतने अधिक हाथों में होकर जाता कि शायद ही उसका कोई भाग भूखे मरने वालों के पास तक पहुँचता पर अब दशा एक दम भिन्न है। प्रत्येक रूसी तवारिश (कामरेड) या साथी कहलाता है।

देश दर्शन

नेव्स्की प्रास्पेक्ट पर सभी सुन्दर तथा फैशन वाली दूकानें हैं। वहां पर पुस्तक विक्रेताओं की संख्या बहुत कम है। रूस में पुस्तक लिखने वालों तथा पत्रों को बहुत कम स्वतंत्रता दी गई है। बाहर से आने वाले पत्रों का निरीक्षण रूसी लोग करते रहते हैं कि कहीं उनमें रूसी सरकार के सम्बन्ध में कोई बात तो नहीं लिखी है।

लैनिनग्रेड का बड़ा बाजार बड़ा भारी है। वहां पर मीलों सड़कें तथा गलियां हैं। लोग वहां सामान खरीदने के लिये एकत्रित होते हैं। पहले बेचने वाले प्रत्येक भाँति के सौदागर ऊँचे शब्दों में चिल्लाते रहते थे। जब बाजार का समय निकल जाता तो व्यापारी लोग गिलहरियों बुलबुलों तथा अपने दूसरे पक्षियों के साथ आनन्द उठाने लगते थे। वह आपस में अपने मित्रों सहित मदिरा आदि का भी पान करते थे।

प्रत्येक दूकान, कमरे तथा दफ्तर के एक कोने में एक पवित्र तस्वीर लटकती रहती थी उसके पास एक रोशनी जलती रहती थी। भीतर आने वाला प्रत्येक व्यक्ति उस तसवीर को झुक कर प्रणाम करता। तस्वीर

वाली लालटेन के सिवा और कहीं पर कोई वस्तु नहीं जलाई जाती थी। अब प्रायः सब कहीं लेनिन का चित्र टंगा दिखाई देता है।

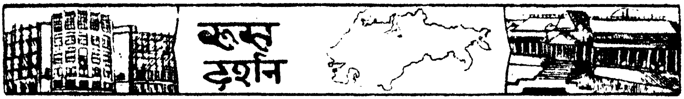
पहले पवित्र तस्वीरों और मूर्तियों को बेचने के लिये भी लैनिनग्राड में बहुत सी दूकानें थीं। उन दूकानों में बड़ी भीड़ रहती थी। मडोना, सेंट निकोलस, सेंट एली-गाज़ आदि साधुओं के तस्वीरों के ढेर लगे रहते थे। इसके सिवा दूसरे साधुओं तथा महान व्यक्तियों की सुन्दर तस्वीरें भी रहती थीं। अब इनका नाम नहीं है।

पु ाने रूसी लोग बेंचे हुये सामान का बिल कागज़ पर लिख कर नहीं तयार करते थे वह गुरियां गिन कर हिसाब बनाते थे। यद्यपि वह स्कूल में अंक-गणित सीखते थे तो भी जब दूकानदारी करने लगते तो गुरियों के द्वारा गिन कर ही हिसाब बताते थे।

रूस के सिक्के बड़े सादे होते हैं। चाँदी का सिक्का लगभग डेढ़ रुपये का होता है उनका ताँबे का कोपेक सिक्का लगभग एक फार्दिङ्ग (पैसे) के मूल्य का होता है।

फोटाँका नहर को पार करने के पश्चात् लैनिनग्रेड

नगर के सभ्य भाग का अंत हो जाता है और उसके नीचे के श्रेणी के लोगों के मकान तथा छोटी मामूली दूकानों का आरम्भ होता है। इस भाग में लोग प्राचीन ढंग से रहते हैं। वह बड़ी बड़ी दाढ़ियाँ रखते हैं और लकड़ी के मकानों में रहते हैं। नेव्स्की सड़क के अंत में अलेग्ज़ण्डर नेव्स्की साधु की समाधि है।



नेवा

नेवा नदी लैनिनग्रेड नगर में होकर बहती है। यह नदी नगर के भीतर तेरह मील लम्बी है। उसका पानी साफ, शुद्ध और चमकदार है। उसमें होकर सभी प्रकार का सामान आता जाता है। ग्रीष्म काल में उसका पानी और उसके द्वीप बड़े आनन्ददायक होते हैं। जाड़े के दिनों में नदी का पानी जम जाता है और दर्शक लोग उसे देखने जाते हैं। बसंत काल में वह भयानक हो जाती है।

यह नदी साल में छः महीने जमी रहती है। उसके ऊपर पानटून पुल बना दिये जाते हैं। जाड़े की ऋतु का आरम्भ सेंट निकोलस के दिन से होता है। यह त्योहार १९ दिसम्बर को होता है। रूसी ग्रेगोरियन कैलेन्डर के अनुसार यह त्योहार ६ दिसम्बर को होता है। इस दिन ट्राम गाड़ियों की लाइनें बरफ पर बिछाई जाती हैं और सड़कों पर घास फूस बिछा दी जाती है। स्ली गाड़ियों की दौड़ होती है और बरफ पर फिसलने वाले लोग बरफ पर फिसलते हैं।

देश दर्शन

बड़े दिन के त्योहार के कुछ पहले बरफ पर एक बड़ा बाज़ार लगता है और दूकानें मीलों तक बरफ पर फैली रहती हैं। वहाँ पर सभी वस्तु बरफ से ढकी रहती हैं। अगणित बैलों, भेड़ों, बकरियों, सुअरों आदि के ढेर लगे रहते हैं। कसाई लोग अपनी इच्छा के अनुसार उनका चुनाव करते हैं। वे अपनी आरी या कुल्हाड़ी से पशुओं को काटते हैं। रीछ भी वहां पर रहते हैं। यह पशु कई भाग में काटे जाते हैं। खरीदने वाले कटे हुये भागों को लेजाकर अपने अपने बरफदार संदूकचों या कमरों में रखते हैं।

प्रत्येक घर में बरफ का एक कमरा बना होता है। इस कमरे में बरफ के टुकड़ों के ढेर तथा आल्मारियाँ बनी रहती हैं जिनमें गरमी के दिनों में प्रयोग की जाने वाली वस्तु या भोजन रक्खा जाता है। इसलिये नेवा नदी से हज़ारों की संख्या में लोग बरफ निकालते रहते हैं। रूसी गाड़ियों का एक बड़ा जमघट रहता है जो बरफ से लदी हुई मकानों की ओर जाती रहती हैं। बरफों के तहों को रूसी लोग कुल्हाड़ियों द्वारा काटते हैं।

बरफ की तहों में छेद बनाये जाते हैं और रूसी

धोबिनें उस अधजमे पानी में कपड़े धोती हैं। ऐसे पानी में धोने से कपड़े बहुत कम साफ होते हैं।

जब अधिक शीत पड़ने लगती है तो बच्चों को बाहर जाने को आज्ञा नहीं दी जाती है क्योंकि आँख, नाक और मुँह पर बरफ जम जाती है। रूसी लोग जब ऐसी शीत में एक दूसरे से मिलते हैं तो रगड़ कर एक दूसरे की नाक बरफ से साफ करते हैं। रूसी द्वारों पर बहुधा जब लोगों की आंखों पर बरफ जम जाती है तो वे पुकारते दीख पड़ते हैं। द्वार खुलने पर यह लोग भीतर गर्म स्थान पर ले जाये जाते हैं जहां पर उनको आंख की बरफ पिघलती है।

प्रत्येक रूसी घर में एक बड़ी भट्टी रहती है। भट्टियों पर गरीब लोग भोजन बनाते और स्नान करते हैं।

प्रत्येक १९ जनवरी को एपीफनी का त्योहार मनाया जाता है। इस त्योहार को जल का बेनीडिक्शन (वरदान) कहते हैं। लेनिनग्रेड में इस त्योहार का संस्कार शीतकालीन महल के बाहर रूस का राजा ज़ार करता था। बरफ के ऊपर एक लकड़ी का मन्दिर बना दिया जाता है। यह भीतर की ओर से सजाया रहता है।

बरफ में एक छिद्र कर दिया जाता था। सैनिक, पुजारी तथा पादरी आदि लोगों का एक जलूस तथा रूस के राजा और उसके दरबारियों का दूसरा जलूस बरफ के छिद्र को जाता था। सभी लोग इम्पीरियल चर्च में धार्मिक कर्म करने के पश्चात् बरफ पर फिर से धार्मिक संस्कार करते थे। पानी की शुद्धि की जाती थी। उसके भीतर जो अपवित्र आत्मा होती थी वह भाग जाती थी। सैनिक लोग तोप तथा गोलों की आवाज करते थे और फिर पवित्र पानी सब के ऊपर डाला जाता था। उसके बाद लोग पानी घड़ों में भर भर कर अपने अपने घर लौटते थे। बहुत से लोग पानी में अपनी आत्मा को शुद्ध करने के लिये गोता लगाते थे। बहुत से लोग अपने बच्चों को बर्फीले पानी में गोता लगवाते थे शीतल पानी का इतना बुरा प्रभाव होता था कि गोता लगवाते ही बच्चे शायद ही जीवित रहते थे। उसी दिन सभी लोग अपने द्वारों पर क्रास (+) का चिन्ह बनाते थे जिससे भागी हुई दुष्ट आत्मा उनके घरों में प्रवेश न कर सके।

प्रायः अप्रैल महीने में बरफ पिघलने लगती है। तभी ट्रैम गाड़ियों की लाइनें हटा दी जाती हैं और लकड़ी



के पुल तोड़ दिये जाते हैं। उस समय भिन्न भिन्न नदियों के तटों के बीच मार्ग दुर्गम हो जाता है। जब बरफ के टुकड़े टुकड़े हो जाते हैं और वे बहने लगते हैं तो भी रूसी वीर लोग बरफ के टुकड़ों पर पैर रखते डांकते हुये नदी पार करत हैं। बहुत से लोग गिर कर डूब जाते हैं। योरुप भर में नेवा नदी ही ऐसी है जिसमें सबसे अधिक मनुष्य मरा करते हैं।

पहले जब नाव चलने के लिये मार्ग बन जाता तो किले का गवर्नर एक घड़ा पानी रूस के राजा के पास ले जाता और नदी खुल जाने की घोषणा करता। रूस का राजा इस पानी को पेट भर कर पीता (प्राचीन काल में राजा घड़े को सोने से भर दिया करता था) फिर पानी के बदले में दिया जाने वाला धन नियत कर दिया जाता था।

जब तक कमांडर की नाव नदी पार नहीं कर जाती कोई नाव नहीं चल सकती। सुरक्षित नाव लौटने पर तोप छुड़ाई जाती। तोप की आवाज सुन कर नावें आने जाने लगती हैं। लडोगा झील से चलकर नावें नदी में दौड़ करने आती हैं। इसी समय नदी में बाढ़ आती है।

लेनिनग्रेड समुद्र के धरातल से केवल १३ फुट ऊँचा है। इसलिये पानी की बाढ़ पर बड़ा ध्यान रक्खा जाता है। खतरे की दशा में तोप की आवाज की जाती है। उसे सुनते ही नीचे के कमरों के लोग ऊपर के स्थानों को चले जाते हैं। जब गलियों तथा सड़कों पर पानी भर जाता तो प्रत्येक १५ मिनट पर सचेत करने के लिये तोप छुड़ाई जाती है। जब बाढ़ होती है और बरफ पिघलती रहती है और पछुआ हवा चलने लगती है तो पानी फिनलैंड की खाड़ी से चढ़ता है। उस समय प्रत्येक मिनट में तोप का शब्द होता है जिससे समस्त जहाज डूबते हुये नगर की रक्षा करने के लिये दौड़ पड़ते हैं।

वाल्गा

रूस की मुख्य नदी वाल्गा है। उस नदी में बोट पर एक सप्ताह तक यात्रा की जा सकती है। रिबिन्स्क और एस्ट्राचन वाल्गा नदी के किनारे बसे हुये मुख्य नगर हैं। इस नदी में लगभग २००० मील तक नावें तथा स्टीमर चलते हैं। लोग नदी द्वारा यात्रा किया करते हैं। लकड़ी, तेल और दूसरे सामान भी नदी द्वारा आया जाया करते हैं। वाल्गा नदी में एक्सप्रेस स्टीमर चला करते हैं। यह स्टीमर मुख्य मुख्य स्थानों पर ठहरा करते हैं। छोटे स्टीमर छोटे छोटे गांवों में भी ठहरा करते हैं।

रूस के स्टीमरों में चार प्रकार के स्थान होते हैं और यात्री अपनी इच्छा के अनुसार उन पर भ्रमण कर सकता है। ऊपरी भाग में प्रथम तथा द्वितीय श्रेणी के स्थान होते हैं। वहां पर यात्रियों के लिये छोटे कमरे, डेक, गद्दे और पानी का स्थान तथा पाइप रहता है। पाइप द्वारा पानी नदी से ऊपर खींचा जा सकता है। रूसी लोग बहते पानी के प्रयोग करने के बड़े शौकीन होते हैं। छोटे कमरों के चारों ओर एक या दो कतारें

तख्तों की रहती हैं। इन्हीं में त्रितीय श्रेणी के लोग यात्रा करते हैं। यात्री चाहे जिस श्रेणी में यात्रा करे उसे अपना खास कम्बल रखना पड़ता है।

चतुर्थ श्रेणी में लोग भीतर बन्द कर दिये जाते हैं। वहां पर तख्ते नहीं रहते हैं। इस श्रेणी में यात्रा करने वाले नीची काठ की बनी मेज़ या स्टीमर के तख्ते के ऊपर या लदे हुये सामान के बीच गंदे स्थान में सोते हैं। काठ की मेज़ें बड़ी गन्दी होती हैं उनके चारों ओर भी बड़ी गन्दगी होती है। तीसरी श्रेणी के यात्री स्वच्छ रहते हैं परन्तु वह बड़े बातूनी होते हैं। वह रात को बड़ी देर में बिश्राम करते हैं और सबेरे भी प्रातः काल ही उठकर बातें करने लग जाते हैं। यात्री लोग दिन में कुछ सो लिया करते हैं।

स्टीमरों पर प्रत्येक भाँति के लोग यात्रा किया करते हैं। धनी व्यापारी अपनी स्त्रियों, बच्चों और नौकरों के साथ यात्रा करते हैं। बच्चे वहाँ बड़ा शोर मचाते हैं। विश्वविद्यालय के विद्यार्थी भी उन पर यात्रा करते हैं।

वहाँ पर यहूदी लोग देखने को मिलेंगे। वे तातार



व्यापारी के पीछे लगे रहते हैं। पहले जो मुसलमान लोग वहाँ यात्रा करते थे वह सदैव अपने साथ बगल में दरी लिये रहते थे। यदि मुसलमान यात्री के पास सामान रहता तो वह अपने सामान को ले जाने के लिये कुली को भाड़े पर कर लेता। परन्तु फिर भी वह दरी स्वयं लिये रहता। वह अपना इसी दरी पर नमाज़ पढ़ता या ईश्वर की अराधना करता। वह सदैव मक्का शरीफ की ओर मुँह करके प्रार्थना किया करता।

वाल्गा नदी की तटीय भूमि बड़ी उपजाऊ है। उसका तट ढालू है। रूस में लड़कियां गायें चराती हैं। वह उन्हें नदी में पानी पिलाने के लिये ले जाती हैं। वह हरा कोट पहनती हैं। कोट के नीचे लाल कमीज होती है। वह सिर में हैट के स्थान पर लाल रंग की रुमाल बांधती हैं।

वाल्गा नदी के किनारे पर बालू के ढेर नहीं हैं। उसका तटीय भाग छिछला है। किनारे पर चलने वाले स्टीमर बहुधा भूमि पर आ लगते हैं। स्टीमर का कपतान डान कोसकों की सहायता से उन्हें पानी में ले जाता है।

देश दर्शन

वाल्गा नदी का बहाव बहुत धीमा है उसके किनारे के गावों का दृश्य रमणीक नहीं है। जब स्टीमर खड़ा होता है तो लोग गाँव की चटियादार (पत्थर की छोटी शिला वाली) गलियों को ध्यानपूर्वक देखते हैं। चटियों के मध्य हरी घास उगी रहती है। प्रातःकाल और संध्या के समय वह गलियां खाली रहती हैं। गाँवों में दिन में बाज़ार लगता है। पहले घर स्वेत परन्तु गन्दे और बहुत कम ऊँचे होते थे।

नदी के तट पर बाँधों के ऊपर लोगों की बड़ी भीड़ रहती है। वहाँ पर भांति भाँति के लोग आते जाते दिखाई पड़ते हैं। वहां पर लोग घास जलाकर स्थानों पर उजाला करते हैं। लोग तरबूज तथा और दूसरे फल यात्रियों के हाथ बेचते हैं। स्टीमरों में कोयला या लकड़ी नहीं जलायी जाती है। दक्षिण की ओर जाने वाले स्टीमर लकड़ी और उत्तर को जाने वाले अनाज लादे हुये दिखाई पड़ते हैं। बोझ ढोने का काम मनुष्य करते हैं वह मोटे फटे कोट पहिने रहते हैं। वह मोटी टोपी लगाते हैं। उनकी टोपी तथा सिर दोनों गन्दे रहते हैं।

पैरों में मोजे के स्थान पर वह । पट्टियां बांधते हैं "क्रैश" नामक मोटे कपड़े की बनाई जाती हैं। कुली लोग कभी कभी अपनी पीठ पर लकड़ी की पट्टियां रखते हैं। जिससे वह अधिक बोझ पीठ पर लाद सकें। स्टीमर के पहुँचने पर कुली लोग दौड़ कर उसके समीप नहीं जाते हैं वह धीरे धीरे स्टीमर के पास आते हैं। रूसी लोग जल्दबाज नहीं होते हैं वह बड़े सुस्त होते हैं।

निजनी नवा गोरोड को आजकल गोर्की कहते हैं। निजनी नगर के आगे वाल्गा नदी की चौड़ाई एक मील हो जाती है। तट भी बड़ा सुहावना तथा रमणीक हो जाता है। वहां पर एक पर्वतीय श्रेणी है। पानी के ऊपर इसकी चट्टानें कहीं कहीं लम्बाकार खड़ी रहती हैं। वाल्गा नदी में पाल वाले स्टीमर अथवा नावें नहीं चलती हैं। निजनी से दो दिन की यात्रा करने के बाद स्टीमर समारा नगर में पहुँचता । यह नगर निजनी से ५०० मील की दूरी पर है। यह नगर एक रेलवे स्टेशन है। यहां से साइबेरिया के लिये रेलगाड़ी मिलती है। व्लाडीवास्टक यहां से ४००० मील की दूरी पर है।

यह नगर अनाज की उपज करने वाले प्रान्त का केन्द्र है। यहां पर हजारों मील से अनाज आता है। यह अनाज नहर और नेवा नदी होकर लैनिनग्रेड जाता है। रीगा को भी यहीं से अनाज जाता है और फिर वहां से इंगलैण्ड को भेज दिया जाता है। जब वर्षा नहीं होती है तो अकाल पड़ जाता है। उस समय रूस की सरकार सैनिकों को उजाड़ स्थानों में भेज देती है। यह सैनिक वहां पर पुलीस की सहायता करते हैं जिससे देश में किसी प्रकार का विप्लव न उत्पन्न होवे। रूसी सैनिक मदिरा बहुत पीते हैं और कुछ गन्दे होते हैं।

कोसक (सैनिक) संगीत के बड़े शौकीन होते हैं। वह नावों पर बहुधा संगीत गाया करते हैं। स्टेङ्काराजिन उनका एक बड़ा नेता था। उसने ज़ार अलिक्सेस के विरुद्ध विप्लव किया था। उसने सिम्बिर्क कैस्पियन सागर तक के नगर जला दिये थे। वह वाल्गा नदी में चलने वाले जहाज़ों से कर लेता था। विप्लव के सैनिकों ने अपने पकड़ने वालों का बड़ी बहादुरी से सामना किया था। जब उनका नेता स्टेङ्कास ज़ार के सामने लाया गया तो ज़ार ने उससे पूछा तुम्हारे कौन कौन

साथी थे। उसके उत्तर में उसने कहा मेरे चार साथी थे। पहला अँधेरी रात, दूसरे फौलाद का चाकू, तीसरे मेरी अच्छी घोड़ी और चौथे एक मज़बूत धनुष। उसने यह भी कहा कि बाण उसके दूत थे। ज़ार उसके वीरता पूर्ण उत्तर से बड़ा प्रसन्न हुआ उसने उसे माफ कर दिया और मैदान में उसे फांसी पर चढ़ा दिया। उस स्थान पर पहुँच कर सैनिक उसकी याद किया करते हैं।

टज़ारोटि्सन भी वाल्गा के किनारे एक नगर है। यह एक बड़ा स्थान है। वहां पर चार मार्ग आकर मिलते हैं। वहां पर यहूदी लोग यूराल पर्वत के बहुमूल्य पत्थर तथा हीरे बेचने के लिये ले आते हैं जो जो लोग पत्थरों की पहचान रखते हों उन्हों को चाहिये कि वह उनसे खरीदा करें नहीं तो ठग जाने का बड़ा भय रहता है। इसी कारण जहाज के अफ़सर उन्हें देखते ही भगाने का प्रयत्न करते हैं। वह उन्हें उन पत्थरों की बिक्री नहीं करने देते हैं।

टज़ारीट्ज़िन से दो दिन की यात्रा करने के पश्चात् एस्ट्राचन का नगर मिलता है। वहां पर गंदे और शोर मचाने वालों की भीड़ बांधों तथा कमरों और बरामदों

में लगी रहती है परन्तु वह लोग रंग बिरंगे कपड़े पहिने रहते हैं जो पूर्व में ही केवल देखने को मिलते हैं। इस नगर में पहुँचने पर प्रतीत होता है कि योरुप का अंत हो गया और एशिया का आरम्भ हो गया।



दक्षिणी रूस के निवासी

ज़ार राजाओं के पहिले जब रूस के प्रान्तों में छोटे छोटे राजा शासक थे उस समय तातार जाति ने रूस के राज्यों पर आक्रमण किया और नगरों तथा गांवों में लूटा, घरों को जला दिया निवासियों को मार डाला या गुलाम बनाया था। जहां कहीं वह गये उनकी विजय हुई, उन्होंने समस्त रूस, पोलैंड और बल्गेरिया तथा रूस के मध्य वाले समस्त राष्ट्रों पर अधिकार जमा लिया था। वह बड़े निर्दयी तथा कठोर थे। सारे योरुप पर उनका भय छाया हुआ था।

तातार जाति का सर्दार चङ्गेज़ खां था। वह चीन के मंगोल जाति का शासक था। वह शरीर का बड़ा तथा बहादुर था। वह और उसके सैनिक कुरूप थे। वे डेरों में रहा करते और भेड़ बकरियां पाला करते थे। जब उन्हें धन की आवश्यकता होती थी तो वह समीपवर्ती जातियों पर धावा मारते थे और उन्हें लूट लेते थे। उनके घर द्वार तथा सामान तो अधिक नहीं था इसी कारण वह पश्चिम को ओर चले और जो लोग मार्ग में

मिलते जाते थे उन्हें अपने साथ फुसला कर मिलाते जाते थे। इसी कारण उनकी सेना बढ़ती जाती थी।

थोड़े समय में ही चेङ्गेज खाँ का राज्य संसार के लगभग एक चौथाई भाग में स्थापित हो गया था। परन्तु मित्र जातियां बहुत समय तक एक शासक के अन्तर्गत न रह सकीं और उसकी मृत्यु के पश्चात् साम्राज्य फिर छिन्न भिन्न हो गया। तातार राज्य इसी साम्राज्य का एक भाग था। रूसी राजे तातार शासक के अन्तर्गत थे और वह उसको भेंट देने के लिये वाल्गा के तट पर बसी राजधानी को जाया करते थे।

तातार लोग रूस के लोगों के धर्म नियम तथा प्रबन्ध आदि की कुछ भी परवाह नहीं करते थे। उन्हें केवल कर लेने से मतलब था। वह लोग चीनियों से बहुत कुछ मिलते जुलते थे। वह लोग अपनी निर्दयता तथा सख्ती के कारण घृणा की दृष्टि से देखे जाते थे।

तातार लोगों का एक अद्भुत मत था। वह लोग अग्नि, बुद्ध और मूर्तियों के पुजारी थे। उनका एक खान ईसाई साधु बना था। बाद को समस्त तातार जाति मुसलमान बन गई थी।

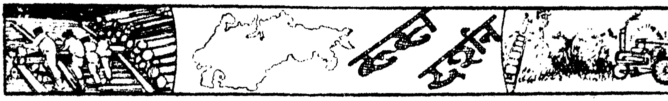


२ —दागीस्तान के सामूहिक खेतों (कलेक्टिव फार्मों) के किसानों के जलूस का एक दृश्य। इनकी गाड़ियां फूलों से सजी हुई हैं।

जब रूसी लोगों ने देखा कि उन्हें विप्लव करने से हानि के सिवा लाभ नहीं होता तो वह खान की सेवा करने लगे और उसे भेंट देकर मिलाने लगे। खान के बहुत सी स्त्रियां तथा लड़कियां थीं इसलिये बहुत से रूसी राजाओं का व्याह खान की पुत्रियों से हो गया। कुछ समय के पश्चात् एक राजा को विप्लवकारी लोगों तथा दूसरे रूसी राजाओं से कर लेने का अधिकार दिया गया। इस प्रकार मास्को के राजा की शक्ति बढ़ी और उसे खान की ओर से ग्रैण्ड प्रिन्स (बड़े राजा) की उपाधि प्राप्त हुई। पन्द्रहवीं सदी में तातार जाति की अवनति होने लगी। धीरे धीरे रूसी राजाओं ने संगठित होकर तातार जाति से स्वतंत्रता प्राप्त कर लिया।

फिर भी तातार जाति दक्षिण के मैदानों में रहती थी और रूसी लोगों को भयभीत करती रहती थी। वह लोग बच्चों को उठा ले जाते थे, पशु चुरा ले जाते थे, चर्चों और घरों को जला देते थे और बड़ों को वह या मार डालते थे या गुलाम बना लेते थे।

भयंकर इवान टेरीबुल मास्को का बड़ा राजा था। वह रूस का ज़ार बना। तातार लोगों ने थियोडो-



सिया में गुलामों का व्यापार के लिये एक बड़ा बाज़ार स्थापित कर रक्खा था। वह पोलैंड और रूस से गुलाम लाकर तुर्कों के हाथ बेचा करते थे। पोलैंड के गुलामों का अधिक मूल्य मिलता था क्योंकि वह रूसी लोगों से कम चतुर होते थे।

अपनी प्रजा को बचाने के लिये ज़ार और पोलैंड के राजा संगठित हो गये और उन्होंने क़िले बनाना तथा कोसक सेना तयार करना आरम्भ किया। डान, नीपर वाल्गा और यूराल नदी के तटीय निवासी लोग भी सैनिक थे। उन्हें स्वतंत्र कोसक कहा जाता था। इन सैनिकों का वर्णन रूस की कहानियों तथा संगीतों में बहुत है। यह लोग ज़ार के आधीन थे परन्तु शासक थे अपने स्वजातीय रूसियों के कारण वह तातार जाति को कष्ट दिया करते थे। जो कोई उनके राज्य में होकर जाना चाहता था उसे उनकी आज्ञा प्राप्त करनी पड़ती थी।

स्वतंत्र कोसक स्त्रियों को चुरा कर अपनी धर्मपत्नी बनाते थे। उन्होंने इतनी अधिक तातार स्त्रियों को चुरा कर अपनी स्त्रियां बनाया कि वह सच्चे रूसी न रह गये

और उनके अन्दर तातार भाव आ गये। उनके भीतर तातारी निर्दयता आ गई और वह तातार कोड़े अब भी चिन्ह स्वरूप उनके मध्य पाये जाते हैं।

भांति भाँति की कोसक जातियाँ उत्पन्न हो गईं और बड़ा उत्पात मचाने लगीं। वह लूट पाट कर अपना काम चलाती थीं और परिश्रम करना नहीं चाहती थीं। उन्होंने ज़ार की पराधीनता स्वीकार नहीं की। वे या तो ज़ार के विरुद्ध विप्लव करते रहते थे या ज़ार के शत्रुओं के साथ होकर लड़ाई करते थे।

रूस के राजा जैसे जैसे अपनी सीमा एशिया की ओर बढ़ाते जाते थे। वह कोसक सैनिकों को सीमा की रक्षा करने के लिये भेजते जाते थे। कुछ समय पहले कोसक लोगों को उनके सैनिक होने के लिये भूमि मिली थी। वह २० साल तक सेना में काम करते हैं। उन्हें वेतन नहीं दिया जाता था। उन्हें भूमि कर भी नहीं देना पड़ता था। इसी कारण जब कोसक सेना किसी गाँव के बलवे को शान्त करने के लिये भेजी जाती तो वह लूट पाट मचा देती।

अब तातार जाति पहले से अधिक शान्ति पूर्वक रहने



लगी है। परन्तु फिर भो वह अभी डेरों में निवास करती



३—जार्जिया की फौजी सड़क का एक दृश्य।

है। स्टैपी (घास) के मैदानों में वृक्ष तथा पहाड़ियाँ

नहीं हैं। मैदान सैकड़ों मील लम्बे हैं वहां कोसक लोगों के बशीर आउल (घूमने वाले गांव) हैं। कोसक लोगों के डेरे गोल होते हैं और फेल्ट से ढके रहते हैं। यात्रियों को खातिर के साथ कोसक अपने डेरों में ठहराते हैं। उनका नेता यात्री का प्रेम के साथ सन्मान करता है। कोसक लोगों की आँखें छोटी होती हैं।

कोसक लोग मंगोलियन लोगों से मिलते जुलते हैं परन्तु उनकी भांति कुरूप नहीं होते हैं। वह अपने सिर के बाल बना डालते हैं। उनकी स्त्रियाँ पर्दा लगाती हैं। उनके चेहरे नहीं देखे जा सकते हैं और वह अभी उन्नतिशील नहीं हो पाई हैं। वह उत्सुकता के कारण अपने डेरों से निकल कर अतिथि को अपने पर्दे के छेदों से देखती हैं। डेरों में मेज़, कुर्सियाँ तथा और दूसरे सामान नहीं होते हैं। फर्श पर केवल गद्दे या चटाइयाँ रहती हैं। सोते समय कई एक गद्दे या चटाइयाँ एक के ऊपर दूसरे करके बिछा दिये जाते हैं।

वहाँ पर खाना बहुत सादा होता है। यदि कोई यात्री उबाला हुआ भेड़ का मांस नहीं खाना चाहता तो उसे वहाँ कठिनाई होती है। भेड़ को मार कर,

चमड़ा निकाल कर टुकड़े टुकड़े करके एक बड़े बर्तन में पानी भर कर पकने के लिये चूल्हे या भट्टी पर चढ़ा देते हैं। जब वह पक जाता है तो लकड़ी के चम्मच से मांस निकाला जाता है। फर्श पर यही मांस मलमल पर रख दिया जाता है और यही उनका भोजन है। कपड़े के चारों ओर भोजन करने वाले बैठते हैं और भोजन करते हैं। चम्मच या कांटे या चाकू का प्रयोग भोजन में नहीं होता है। रोटी भी वहाँ खाने को नहीं मिलती है।

भोजन के पश्चात् घोड़ी का दूध (मट्ठे की तरह) पीने को मिलता है। यह हफ़्तों गर्मी में रक्खे रहने के कारण मट्ठे की भांति हो जाता है। जिस प्रकार भोजन के लिये केवल एक ही प्याला होता है उसी भांति दूध का भी केवल एक ही प्याला होता है और उसी में से सभी लोग पीते हैं। यह लोग सफाई बहुत कम पसन्द करते हैं। यह नहाना नहीं चाहते हैं।

बशकीर और किरगीज़ दोनों जातियां चराने वाली जातियां हैं। यह लोग भेड़ों, बकरियों के गल्ले रखते हैं। किरगीज़ लोग बशकीर लोगों के और दक्षिण की

देश दर्शन



ओर रहते हैं। यह लोग काम करना अच्छा नहीं समझते और हल जोतने से स्थान छोड़ कर दूसरे स्थान चला जाना अच्छा समझते हैं। उनकी संख्या बढ़ती जाती है परन्तु भूमि नहीं बढ़ती इसलिये रूसी सीमा पर के निवासी रूसी देहातियों को किराये पर करके अपनी खेती करते हैं।

ग्राम्य-जीवन तथा रीति-रिवाज

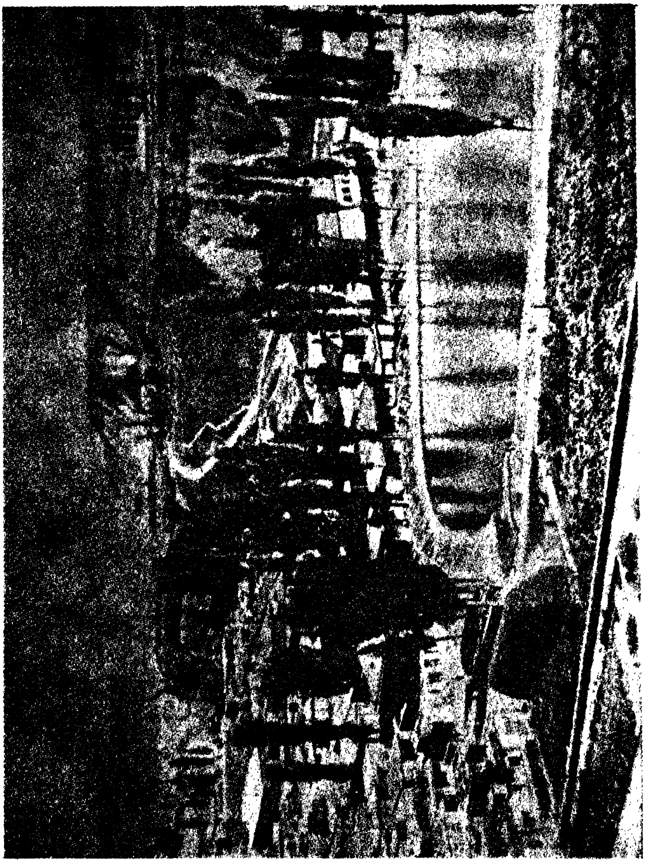
रूसी गांव का रहने वाला किसान अपनी इच्छा के अनुसार खेती नहीं कर सकता और न पौदे लगा सकता है। इसका मुख्य कारण यह है कि वहां किसी प्रकार का लगान नहीं होता है और उसका खेत उसका नहीं वरन् समस्त गांव की सम्पत्ति है। प्रत्येक वंश को अपनी भूमि के अनुसार कर देना पड़ता है। यदि किसी वंश में काम करने वाले कम होते हैं और लड़के अधिक होते हैं तो गांव वालों को उनका बोझ सँभालना पड़ता है। इसका प्रबन्ध वह गांव की सभा के द्वारा करते हैं। इस सभा को "मीर" कहते हैं। इस सभा के सदस्य गांव के प्रत्येक वंश या घर का अगुवा होता है।

मामूली तौर पर घर का अगुवा सब से बड़ा पुरुष होता है। उसका प्रभाव वंश पर अधिक होता है। शादी के समय भी उसी की राय प्रधान रहती है। जब घर का अगुवा नर घर से बाहर किसी नगर में काम पर रहता है तो उसकी स्त्री गांव की पंचायत में भाग लेती है।

मीर या सभा अपना एक अगुवा चुनती है जो स्टारस्टा कहलाता है। वह अपने परिश्रम के बदले में कुछ

रुपये महीने वेतन पाता है। वह अपने गले में एक पीतल की जंजीर पहिनता है जिसमें एक तमग़ा लगा रहता है। यह तमग़ा तांबे का होता है। तमग़े के होते हुए भी कोई व्यक्ति स्ट्रोस्टा बनना स्वीकार नहीं करता है। वोट अथवा मत लेने के लिये किसी प्रकार के प्रचार की आवश्यकता नहीं होती है। मीर किसी स्थान पर, खेत या किसी मैदान में एकत्रित होता है और वहीं उसका चुनाव होता है। चुनाव होने पर चुने हुए व्यक्ति को जंज़ीर तथा तमग़ा दे दिया जाता है।

भूमि के बँटवारे में सभी किसान बड़े उत्सुक रहते हैं। दक्षिण की ओर जहां की भूमि उपजाऊ है वहां पर प्रत्येक व्यक्ति भूमि लेना चाहता है, परन्तु मध्यवर्ती अथवा उत्तरी रूस में यह बात नहीं पाई जाती है। भूमि के उपजाऊ न होने पर भी कर अवश्य ही देना पड़ता है। कर सारे गांव पर लगाया जाता है। इसलिये प्रत्येक बंश को अपना भाग देना पड़ता है। गाँव में तीन प्रकार की भूमि होती है। पहली भूमि वह है जहाँ पर किसानों के झोपड़े होते हैं। यह भूमि बाँटी नहीं जा सकती है। दूसरी भूमि खेती करने वाली होती है



और तीसरी भूमि वह है जहाँ पर घास के मैदान होते हैं।



खेती करने वाली भूमि के तीन भाग हैं। एक भाग राई के लिये, दूसरा ग्रीष्मकाल की फसल के लिये और तीसरा भाग दूसरे साल के लिए रक्खा जाता है। यदि गांव में १०० पुरुष होंगे तो भूमि १०० भागों में बांटी जावेगी। मीर की बैठक गांव के बाहर होती है और वहां पर घर के अगुवे एकत्रित होते हैं। वहाँ पर उनसे प्रश्न किया जाता है कि वह कितने भाग चाहता है। प्रत्येक व्यक्ति कम से कम भाग खेती के लिये लेना स्वीकार करता है क्योंकि मानव प्रकृति के अनुसार प्रत्येक कम से कम काम करना चाहता है। जब खेती करने वाली भूमि का बँटवारा हो जाता है तो लोग अपनी स्वीकृति लिख कर देते हैं। एक बार जो बात मीर में तय कर दी जाती है वह बात फिर उलटी नहीं जाती है। रूसी किसान अपने शासक की बातों को बहुत मानते हैं।

मीर की बैठक रविवार या छुट्टी के दिनों हुआ करती है। वहां छुट्टियां बहुत होती हैं। घास के तयार होने पर घास के मैदानों का भी बँटवारा होता है और गल्लों के चराने वालों की नियुक्ति की जाती है।

गांव की रखवाली के लिये चौकीदार की आवश्य-

कता होती है। मीर उसका चुनाव करता है। मीर किसी भी घरेलू काम में अड़चन डाल सकता है। यदि घर में कोई आपत्तिजनक व्यक्ति होता है तो उसका भी प्रबन्ध मीर ही करता है।

रूस में शीतकाल बड़ा भीषण होता है। उस समय नदियां हिम से जम जाती हैं और भूमि साल में पांच महीने बरफ से जमी रहती है। अधिक उत्तर की ओर भूमि ६ महीने बरफ से जमी रहती है। अप्रैल के महीने में बरफ पिघलने लगती है और तब तमाम कीचड़ में ही रूसी किसान अपना बीज बोते हैं। शीत काल के कारण उपज अथवा घास नहीं होती है। पशु निर्बल तथा शक्तिहीन हो जाते हैं।

रूसी किसानों का साधु जार्ज का दिवस एक बड़ा त्योहार होता है। कहा जाता है कि यह साधु किसानों और उसके पशुओं की रक्षा करता है। इस साधु का महत्व इतना बड़ा है कि जब तक उसका त्योहार नहीं मनाया जाता है तब तक घर के बाहर पशु नहीं निकाले जाते हैं चाहे घास की हरयाली मैदानों में छा गई हो। स्वेत रूस में पशु प्रातःकाल इस त्योहार के दिन ओस

में हाँके जाते हैं। छोटे रूस में बच्चे प्रातःकाल ओस में जाकर लोटते हैं। उस दिन की ओस शुभ मानी जाती है।

बसंत ऋतु के आरम्भ होने पर नवयुवक लोग नगरों से अपने घरों को वापस आते हैं और अपने बड़ों की सहायता करते हैं उस समय बहुत से त्योहार मनाये जाते हैं। यह त्योहार लो सण्डे (निचले रविवार) से जून के अंत तक होते हैं। लड़कियां तराइयों में अपने मित्रों तथा भाइयों से मिलने जाती हैं और उनके लौटने की खुशी नाचगान के साथ मनाई जाती है। प्लेटेन उनका मुख्य खेल होता है। कई एक जोड़े एक दूसरे का हाथ पकड़ कर इस खेल में खड़े हो जाते हैं और तब नाचते गाते हैं। वह गोलाकार होकर नाचते गाते हैं। बड़े, बूढ़े अपने झोपड़ों के द्वार पर बैठे गाने सुना करते हैं।

सेन्ट पीटर्स दिवस २९ जून को मनाया जाता है। इस दिन मैदानों से घास अद्भुत गाड़ियों पर लाई जाती है।

दो लकड़ी के बड़े लट्ठे रस्सी द्वारा घोड़े के गले में बाँध दिये जाते हैं। लट्ठे भूमि पर रहते हैं। उन पर

घास के बोझ लादे जाते हैं। यही बिना पहियों की गाड़ी पर घास घर लाई जाती है। सभी लोग एक साथ घास के मैदान में जाते हैं और एक ही साथ उसे वहाँ से उठा लाने का प्रयत्न करते हैं।

एलीजाह के दिन (२० जुलाई) से अगस्त के अंत तक किसानों को कठिन परिश्रम करना पड़ता है। रूस में जई और राई की दो फसलें होती हैं। घर के सभी प्राणी काम करते रहते हैं। सितम्बर के अंत में फसल तयार होती है।

पहली अक्तूबर का फसल घर लाई जाती है। उस समय ईश्वर से प्रार्थना की जाती है। रूसी लोग प्रत्येक त्योहार का आरम्भ प्रार्थना से और अंत मदिरा पान से करते हैं। चर्च में सभी अच्छे वस्त्र धारण करके एकत्रित होते हैं। प्रत्येक किसान के घर में हमारे देश के होली त्योहार की भांति ज्योनार होता है।

ज्योनार के लिये एक कमरा होता है। कमरे के दाहिने कोण में एक मूर्ति रहती है उसे सभी निमंत्रित लोग झुक कर प्रणाम करते हैं। ज्योनार का आरम्भ एक प्रकार के शोरबे से आरम्भ होता है। मांस की

कचौड़ी तथा दूसरे सामान खाने के लिये होते हैं। मांस रूसी किसानों को खाने के लिये बहुत कम प्राप्त होता है। धनी किसानों के घर में ही गाय का मांस प्रयोग किया जा सकता है। पीने के लिये घर की बनी मदिरा और राई की बनी हुई शराब का प्रयोग किया जाता है। राई की मदिरा को रूसी लोग "ओडका" कहते हैं। रूसी लोग मदिरा पेट भर कर पीते हैं। बहुत से लोग तो भोजन के पश्चात् नशे के कारण अपने घर लौट कर नहीं जा सकते हैं और मार्ग में सड़क पर ही गिर कर लोट पोट जाते हैं। नशे से जागने पर घर जाते हैं।

देश दर्शन

रूसी बच्चे

रूस में कोई भी कार्य बिना रीति रिवाज के नहीं किया जाता है इसलिये बच्चे का जन्म होते ही चौबीस घंटे के अन्दर ही पुजारी बुलाया जाता है ।

नगरों में धनी घरों के बच्चों की देखभाल दाइयां



६—रूस के बालक

और नौकरानियां करती हैं। बूढ़ी स्त्रियां बच्चों के समीप लोगों को फटकने नहीं देती हैं । यदि कोई व्यक्ति बच्चे को देख कर सहसा कह उठता है कि बच्चा कितना सुन्दर है तो उसकी दाई मंत्रों द्वारा बच्चे को झाड़ फूंक

देती है जिससे उस मनुष्य की आंख या शब्दों का बुरा प्रभाव बच्चे पर न पड़ सके।

बच्चों को पलने पर सुलाया जाता है। इस पलने को रूस में लियूल्का कहते हैं। यह पलना छत की मुँदरी या छल्ले से लटकाया रहता है। नौकरानी के थोड़े इशारे पर ही पलना झूमता रहता है और वह बच्चे को सुलाने के लिये गीत गाती रहती हैं। बच्चे कपड़े के भीतर लपटे से रहते हैं। मज़बूत बच्चे अधिक दिनों तक लपेटे रहना नहीं पसन्द करते हैं।

बच्चों को दाई नहलाती है। बच्चों को ऊँट के बाल वाली चटाई पर लेटा दिया जाता है उसके सिरहाने तौलिये की तकिया रख दी जाती है। उस पर गरम पानी छोड़ कर उसे नहलाते हैं।

६ सप्ताह तक बच्चे को रैपर में रखते हैं। उसके बाद उसे कमीज या फ्राक पहिनाते हैं। बालक कपड़े पर नीली पट्टी तथा बालिका के कपड़े पर लाल पट्टी लगाई जाती है।

२४ घंटे के भीतर ही पुजारी बुलाया जाता था और बच्चे के नामकरण संस्कार के सम्बन्ध में बातचीत

होती थी। रूसी बच्चों का नाम वहां के साधुवों के नाम पर रक्खा जाता था। वंशज नाम बहुत कम रक्खा जाता था। बच्चे की उत्पत्ति के दिन के समीप जिस साधु का व्यवहार होता था उसी साधु के नाम पर उस बच्चे का नामकरण होता था। बिना साधु के नाम पर लड़के का बपतिस्मा होना कठिन था। बपतिस्मा ईसाई बनाने के संस्कार को कहते हैं। पुजारी या पादरी स्लाओनिक भाषा में प्रार्थना करता और कई बार क्रास का चिन्ह बनाता। वह बच्चे के नाम का प्रयोग भी अपनी प्रार्थना में करता। वह बच्चे को कई बार इकोन (पवित्र मूर्ति) के सामने उठाता उसके पश्चात् उसे सुलाने के लिये भेज देता। अब रूस में ईसाई धर्म और पादरियों का ढोंग एकदम उठ गया है।

बच्चों के लिये रूसी भाषा में प्यार का नाम अलग नहीं होता है इसलिये बच्चे के नाम को बदल कर ही पुकारते हैं।

जब बच्चा बोलने लग जाता है तो वह अपनी माँ को ममाशा या मानमीनका कहने लगता है। माँ को रूसी भाषा में मटोश्का कहते हैं। प्यारे के लिये रूसी भाषा में बटिनका, बटिश्रोश्का, मटीनका मटिश्रोश्का,

लैपिनका और लपौश्का आदि शब्द प्रयोग किये जाते हैं। इन शब्दों को रूसी लोग बच्चे के लिये प्रयोग करते हैं।



स्टेपो प्रदेश के कालमीकिया प्रान्त के बालगृह (चिल्ड्रेन्स होम) का एक दृश्य।

जब बच्चा कुछ बड़ा होता है तो उसके नाम के साथ साथ उसके पिता का भी नाम जोड़ दिया जाता है। जैसे यदि पुत्र का नाम अलेक्सिस है और पिता का नाम डिमिट्री है तो लड़के को अलेक्सिस डिमीट्रीविच नाम से पुकारा जावेगा। पुत्री का नाम भी इसी प्रकार पिता के नाम को जोड़ कर बनाया जाता है। पुत्री को यही नाम उसके ब्याह के समय तक चलता है।

रूसी बच्चों के गाड फादर और गाड मदर दोनों होते हैं। पुजारी जब बपतिस्मा देता है तो वह बच्चे को गरम पानी में नंगा उसका मुँह नीचे की ओर करके तीन बार डुबाता है। उस समय बच्चे के माता पिता कमरे से बाहर कर दिये जाते हैं। नहलाने के पश्चात् पुजारी बच्चे को उसकी छोटी कमीज तथा कोट पहिना देता है। पवित्र तेल में चिड़ये के पंख को डुबो कर उसी से १२ क्रास का चिन्ह पुजारी बच्चे के कपड़े पर बनाता है। बच्चे के सिर पर भी कैंची से बाल काट कर क्रास का चिन्ह बनाया जाता है। संस्कार के समाप्त होने पर बच्चा सुला दिया जाता है और संस्कार में सम्मिलित लोग



पेट भर कर मदिरा पीते हैं और चांदी के सिक्के बच्चे की दाई को देते हैं।

देहात में रविवार के दिन सभी किसान अपने बच्चों को लेकर चर्च में बपतिस्मा दिलाने के लिये आते हैं। चर्च में बैठने के लिये स्थान नहीं रहते हैं। इसलिये बच्चे को दाई के साथ छोड़ कर माता-पिता बाजार चले जाते हैं। दाइयां आपस में बातचीत करती रहती हैं उसी बीच बच्चों का बपतिस्मा संस्कार भी होता जाता है। सभी एक निरत बच्चों का बपतिस्मा एक साथ किया जाता है। पुजारी सभी बालकों का एक ही नाम रखता है इसी प्रकार सभी बालिकाओं का एक ही नाम रक्खा जाता है। बच्चे के मुखड़े पर और शरीर पर पुजारी कई बार दुष्ट आत्मा को भगाने के लिये फूँकता है। पुजारी को बपतिस्मा देने में अवश्य कष्ट उठाना पड़ता है क्योंकि उसे एक साथ ही कई बच्चों को फूँकना तथा नहलाना पड़ता है।

रूस के धनी लोगों के यहां बच्चे की देख भाल के लिये प्रायः [illegible] स्त्रियाँ रक्खी जाती हैं वह बच्चों को [illegible]म्भिक शिक्षा देती हैं। उन्हें रूसी भाषा के पढ़ने

और लिखने की शिक्षा प्रदान की जाती है। रूसी भाषा के वर्णमाला में ३६ वर्ण होते हैं। उन्हें बच्चों का याद करना पड़ता है। कुछ वर्ण अँग्रेज़ी भाषा के से होते हैं। परन्तु उनका उच्चारण अँग्रेज़ी वर्णों की भांति नहीं किया जाता है। प वर्ण का उच्चारण र, ह और न की भांति होता है। व शब्द का उच्चारण ई शब्द की भांति होता है।

पुजारी के पुत्र को रूसी भाषा के साथ ही साथ स्लाओनिक भाषा भी सीखनी पड़ती है इसलिये उस का काम और अधिक कठिन हो जाता है। पुजारी का पुत्र पुजारी बनाया जाता है या उसका चर्च से कुछ न कुछ सम्बन्ध अवश्य ही रहता है। इसी कारण बचपन से ही उसे चर्च के रीत रिवाज़ों को सीखना पड़ता है। बच्चे छोटेपन में भांति भांति के खेल खेलते हैं। वह गुड़िया का खेल भी खेलते हैं।

६ साल के हो जाने पर बच्चे छोटी पाठशालाओं में पढ़ने के लिये भेजे जाते हैं। रूसी दूकानों के ऊपर जो सामान उस दूकान में बिकता है उसके चित्र दूकान के ऊपर टँगे रहते हैं। इससे जो लोग पढ़ना नहीं जानते

उनको बड़ी सुविधा होती है। बच्चे जब दूकान के मार्ग होकर निकलते हैं तो वह उन चित्रों को बड़े प्रेम से देखते हैं।

छोटे बच्चे अपने नाम के दिन का त्योहार बड़ी खुशी से मनाते हैं। यह उनका जन्म दिवस नहीं वरन् साधु का दिवस होता है जिसके नाम पर अमुक बच्चे का नाम रक्खा गया है। यदि बच्चे का अलेक्सिस है तो उसका दिन १२-२५ फरवरी। होगा। १२ रूसी कैलेण्डर और २५ ता० अँग्रजी कैलेण्डर के हिसाब से है।

इस दिन को सबेरे चर्च में सर्विस होती है। यह "सदैव की याद" का संस्कार होता है। सभी लोग उस दिन के नाम वाले चर्च में एकत्रित होते हैं। वह एक नाम की छोटी पुस्तक पुजारी को देते हैं। जो अपनी प्रार्थना के साथ उन नामों को भी जोड़ देता है। कोई कोई लोग पुजारी को कुछ भेंट के साथ और दूसरी किताबें भी देते हैं जिसे पुजारी इतनी शीघ्रता से पढ़ता है कि समझना कठिन हो जाता है।

बच्चे के नाम दिवस के दिन उसके नातेदार लोग

उसे भेंट देते हैं। यह भेंट खिलौनों की होती है। खिलौने काठ के बनाये जाते हैं। खिलौने में बहुधा घोड़े, फावड़े, बाल्टी, बग़ीचा के औज़ारों का संदूक आदि होते हैं।

नाम करण दिवस के दिन भोज होता है जिसमें सभी लोग मदिरा पान करते हैं बच्चा ही उसे पीता है। यदि उसने मदिरा न पिया तो वह क्वास (पतला मदिरा) अवश्य पीता है क्योंकि इसका प्रयोग पानी के स्थान पर किया जाता है। इसी से शिरशी (रूसी शोरवा या रस) तयार किया जाता है। शोरवे में बालाई भी डाली जाती है। मक्खन, जौ का भोजन, मांस और गोबी का प्रयोग इस भोज में अवश्य ही किया जाता है। इन सभी में क्वास मदिरा अवश्य मिलाई जाती है। धनी घरों में क्वास रोजाना ताजी तयार की जाती है। धनी रूसी बहुत से नौकर रखते हैं। क्वास बनाने के लिये एक नौकर अलग रहता है। ऋतु तथा दिन के समय के अनुसार रोज को भोजन होता है। क्योंकि इस सम्बन्ध में धर्म के अनुसार किया जाता है। और जिस समय जो कुछ धार्मिक रूप से आज्ञा होती है वही खाया जाता है।



भोजन में भुने माँस का प्रयोग बहुत कम होता है। समोसे भांति भांति के बनाये जाते हैं। माँस, मछली, फल, तरकारी तथा साग आदि के समोसे बनाये जाते हैं।

हमारे देश की भाँति सभी लोग एक साथ संकेत पर भोजन करने बैठते हैं और संकेत के साथ ही साथ एक साथ सभी लोग उठ जाते हैं। भोजन के समय किसी प्रकार की हँसी या बातचीत नहीं होती है। भोजन के पश्चात् लोग एक दूसरे कमरे में फल फलारी खाते हैं। उसके बाद भोज का अंत हो जाता है।

व्याकरण पाठशालाओं को रूसी भाषा में जिमनासिया कहते हैं। इस पाठशाला में जाने के समय भी एक प्रकार का संस्कार होता है। इस पाठशाला में बच्चों को हमारे यहां के पाठशालों की भांति ही पढ़ाई होती है। दूसरे देश में इतिहास तथा भूगोल की शिक्षा अधिक दी जाती है। प्रत्येक व्याकरण पाठशाले में एक ही प्रकार की पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं।

रूसी बच्चे पढ़ने में बड़ा परिश्रम करते हैं। वह खेलने में बड़े कम शौक़ीन होते हैं। फुटबाल, हाकी,



रूसी सरकार की ओर से बच्चों की देख भाल का बड़ा अच्छा प्रबन्ध है।



क्रीकेट के खेल में उनका ध्यान बहुत कम लगता है। लड़कियां खेल से और अधिक डरता हैं। बड़े होने पर रूसी बच्चे अपनी शिक्षा का प्रयोग अपने देश के हित के लिये करना अधिक अच्छा समझते हैं। प्रत्येक बच्चा रूसी राजनीतिज्ञ होता है। जब वह स्कूल के बाहर आते हैं तो अँग्रेज़ बच्चों से अधिक उनका ज्ञान होता है।

शिक्षित रूसी लोगों की भांति संसार के शायद ही कोई दूसरे लोग अपनी शिक्षा बातचीत और रीति रिवाज़ पर खुशी होते हैं। अधिकांश रूसी लोग अशिक्षित हैं। नगरों तथा बड़े गांवों में गरीबों को शिक्षा के लिये पाठशालायें हैं परन्तु छोटे छोटे गांवों के बीच सैकड़ों मीलों के भीतर भी एक भी पाठशाला देखने को नहीं मिलती है। जो कोई रूसी सरकार की आज्ञा के बिना पाठशाला खोलता है उसे सरकार सज़ा देती है।

जब कभी भी किसी स्थान में गड़बड़ी पड़ती है और कोसक लोग शान्ति करने के लिये भेजे जाते हैं तो वह सबसे पहले स्कूल को ही बन्द करते तथा स्कूल के अध्यापकों को ही बुरा भला कहते तथा मारते हैं।

देश दर्शन

बटर वीक "मक्खन सप्ताह में रूसी लोग घी, दूध, मक्खन, मलाई, मांस मिठाई आदि का बहुत अधिक व्यापार करते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि इस सप्ताह के पश्चात् ७ सप्ताह का उपवास का समय आता है। जब कि मछली और साग तरकारी के सिवा और सब कुछ खाना मना रहता है। यह बात धार्मिक रूप से रूस में प्रचलित है।

"मक्खन सप्ताह" में प्रातः काल बच्चे और बड़े लोग भोजन करके स्लेज़ गाड़ियों को लेकर बरफ के मैदान में चले जाते हैं और वहां पर वह भांति भाँति के खेल खेलते हैं। बरफ के मैदान, ढाल और पहाड़ी पर एक बड़ा जमघट (मेला) रहता है और लोग अपने अपने खेल में व्यस्त रहते हैं। खेल के मैदानों में चाय बेचने वालों की दूकानें रहती हैं। जहाँ पर बच्चे, लड़के और लड़कियाँ चाय पानी करने के लिये जाते हैं। वहां पर दूकानदारों का अच्छा व्यापार हो जाता है।

फल बेचने वाले बालकों को अपनी आवाज़ से अपनी ओर आकर्षित करते हैं और वहाँ पर भी जाकर बच्चे फल इत्यादि खरीदते और खाते हैं। इसके सिवा



खिलौने आदि की भी दूकानें रहती हैं। सभी बच्चे अपनी जेबों को कोपेक्स (रूसी सिक्का) से भर कर स्लेज (बरफ पर चलने वाली गाड़ियां) गाड़ियों पर जाते हैं। इसलिये वह हर प्रकार की वस्तु लेने के लालायित रहते हैं। वह बड़े प्रेम से अपनी जेबों से पैसे निकाल कर फेंकते और मनचाही वस्तु मोल लेते हैं।

मक्खन सप्ताह के आखिरी दिन बारा बजे रात तक खेल तमाशा बरफ के मैदान में होता रहता है। जैसे ही रात को बारह बजते हैं, एकाएक खेल बन्द कर दिये जाते हैं और सभी लोग अपने अपने घरों को वापस लौट जाते हैं। उसके बाद रूस के सभी निवासी ७ सप्ताह तक उपवास करते हैं और किसी प्रकार का आनन्द नहीं मनाते हैं। इन सात सप्ताहों में आनन्द मंगल मनाना, अच्छे भोजन करना तथा अच्छे कपड़े पहिनना धार्मिक रुप से रूस में मना है।

देश दर्शन

वासलीसा की कहानी

रूस के किसी राज्य में एक ब्यापारी रहता था। उसके केवल एक पुत्री थी। उसका नाम रूपवती वास लीसा था।

जब उसकी मां का देहान्त हुआ तो वासलीसा की अवस्था केवल ८ साल की थी। जब उसकी माता मृत शय्या पर थी उसने वासलीसा को बुलाया और उसे एक गुड़िया दिया। गुड़िया देने के पश्चात् माता ने कहा बेटी इस गुड़िया को अपने पास रखना और किसी को मत दिखलाना जब तुम्हारे ऊपर कोई संकट आवे तो इस गुड़िया को भोजन देकर उसकी सलाह लेना। भोजन कर के गुड़िया तुम्हारे संकट के निवारण का उपाय तुम्हें बतलावेगी। उसके पश्चात् माता ने अपनी पुत्री को चूम लिया और स्वर्ग को सिधारी।

कुछ समय के पश्चात् ब्यापारी ने एक विधवा से ब्याह किया। विधवा के दो पुत्रियाँ थीं। वह वासलीसा पर प्यार नहीं रखती थीं। वासलीसा अपने गाँव में सब से सुन्दर बालिका थी। उसकी दूसरी माँ की दोनों

पुत्रियां उसकी सुन्दरता के कारण उस से द्वेश भाव रखती थीं। इस लिये वासलीसा से प्रत्येक भांति का काम लिया करती थीं। वासलीसा धैर्य के साथ सब कुछ करती थी और दिन प्रतिदिन उसकी सुन्दरता बढ़ती जाती थी।

वासलीसा अपना पूरा भोजन नहीं खाती थी वह अच्छे भोजन अपने गुड़िया को रख लेती थी और रात के समय कमरा बन्द करके गुड़िया को खिलाती थी और उससे प्रार्थना करती थी कि वह उसके कष्ट में उसकी सहायक हुआ करे। गुड़िया भोजन करने के पश्चात् वासलीसा को संतोष तथा अच्छी सलाह दिया करती थी और दूसरे दिन वासलीसा का सारा कार्य किया करती थी।

गाँव के सभी नवयुवक वासलीसा से ब्याह करने की इच्छा रखते थे। कोई भी वासलीसा की बहनों की ओर नहीं ताकता था। वासलीसा की सौतेली माँ क्रुद्ध होकर वासलीसा को मारा करती थी।

एक दिन व्यापारी को व्यापारिक काम से बाहर अधिक समय के लिये जाना पड़ा वासलीसा की सौतेली

माँ एक दूसरे घर में रहने के लिये चली गई। उस घर के समीप एक विकट बन था। उस बन में एक झोपड़ा था जिसमें बग-यग नामक एक चुड़ैल रहा करती थी। वह मानव जाति को चिड़ियों के बच्चों के समान खा जाया करती थी।

एक दिन संध्या को माँ ने तीनों पुत्रियों को काम दिया। एक को लैस बनाने का, दूसरे को मोज़े बुनने का और वासलीसा को सूत कातने का काम दिया। उसके बाद माँ ने एक लालटेन छोड़ कर घर के सभी लालटेनों को बुझा दिया। लड़कियां काम करती रहीं आखिर एक ने लालटेन को बुझा दिया।

लालटेन जलाने के लिये घर में आग न थी इसलिये वासलीसा से कहा गया कि वह बग-यग के यहां जा कर आग ले आवे। वासलीसा अपनी गुड़िया को लेकर कमरे में गई और भोजन दे कर उस से सारा समाचार कह सुनाया। गुड़िया की आँखें दिये की भांति चमकने लगीं और उसने कहा "परवाह मत करो, मुझे अपने पास रक्खे रहो बग-यग तुम्हारा कुछ बिगाड़ न सकेगी।

वासलीसा अपनी गुड़िया को जेब में रख कर चली

और समस्त रात तथा समस्त दूसरे दिन तक घने वन में चलती रही।

लगभग दूसरे दिन संध्या के वासलीसा बग-यग के झोंपड़े के समीप पहुँची। झोंपड़े के चारो ओर मरे मनुष्यों की हड्डी का बाड़ा बना था। बाड़े के खूंटों के ऊपर मनुष्य के सिर लगे थे जिनमें आंखें भी थीं। द्वार पर मनुश्य के पैर थे। बोल्ट के स्थान पर बाहें और तालों के स्थान पर तेज दांतों वाला मुँह था। यह दृश्य देख कर वह डर गई।

यकायक वहां हो कर एक सवार शीघ्र ही निकल गया। वह काले घोड़े पर काला वस्त्र पहने था। उसके पश्चात् रात हो गई।

अचानक वृक्षों के फटने से कुछ शब्द सुनाई पड़ा। सूखी पत्तियों से सनसनाहट का संचार हुआ और बग-यग मोटर पर सवार अपने मार्ग को झाड़ू से बहारती आती दिखाई पड़ी। वह अपने द्वार पर पहुँची। थोड़ी देर तक वह चिल्ला उठी :—

"ओफ, मुझे रूसी मांस की गन्ध आ रही है।"

वासलीसा भयभीत हो उसके पास गई और प्रणाम

करके कहा "नानी मेरी सौतेली बहनों ने मुझे तुम्हारे पास आग के लिये भेजा है।

बग-यग ने कहा, "बहुत अच्छा, यदि तुम रुको और मेरा काम कर दो तो मैं तुम्हें आग दूँगी नहीं तो खा जाऊंगी।"

वासलीसा ने बाड़े पर के एक सिर को जलाया और भट्टी से मांस और कमरे से क्वास तथा मदिरा ले आकर बग-यग के सामने रख दिया।

चुड़ैल भोजन करके बिस्तर पर लेट गई। उसने कहा "जब मैं कल प्रातःकाल बाहर जाऊँ तो आंगन, कमरा, रसोईघर, भोजनालय को साफ कर डालना और सन का कपड़ा बना रखना। बखारी के अन्दर जा कर ५६ सेर गेहूँ निकाल लेना और उसे बिन कर साफ कर डालना। यह सभी कर डालना, यदि न किया तो मैं तुम्हें खा जाऊँगी।"

यह आज्ञा देने के बाद बग-यग खर्राटे लेने लगी। वासलीसा ने चुड़ैल के सामने का भोजन बचा गुड़िये के सामने रख कर रोने लगी और कहा "ओ गुड़िया भोजन करो और मेरी सहायता करो यदि मैं अपना

कार्य कल समाप्त न कर सकूंगी तो चुड़ैल मुझे खा जावेगी।"

गुड़िये ने कहा "खाओ और ईश्वर का नाम ले कर आराम से सो जाओ। प्रातःकाल का समय संध्या से अधिक चातुर्यता का होता है।"

वासलीसा बड़े प्रातःकाल उठी और देखा कि चुड़ैल उससे पहले ही उठ चुकी है और बाहर जाने को तयार है। जब वह चली गई तो वासलीसा ने देखा कि उसका सब काम हो गया है और सभी गेहूँ बिना जा चुका है।

संध्या समय जब बग-यग लौटी तो वासलीसा उसे लेने के लिये आगे बढ़ी। चुड़ैल ने पूछा "सब काम हो चुका है।" वासलीसा ने उत्तर दिया, "केवल आपका निरीक्षण बाकी है।"

चुड़ैल ने निरीक्षण किया और कोई त्रुटि न देख कर कहा "बहुत अच्छा।"

उसने भोजन किया, चारपाई पर गई और फिर आज्ञा दिया "जो कुछ आज किया है वही कल भी करना और साथ ही साथ खशखश के बीज को साफ करना।"

यह कह कर चुड़ैल सो गई। वासलीसा ने अपनी गुड़िया को खिलाया। दूसरे दिन प्रातःकाल वह फिर चली गई और वासलीसा ने गुड़िये की सहायता से सब कुछ कर डाला। चुड़ैल ने लौट कर देखा सब ठीक है। उसने कहा "कैसे तुम सारा कर डालती हो।"

वासलीसा ने कहा "माँ की आशीर्वाद से"।

"ओह, यह क्या बात है, मेरे घर से निकलो, मुझे बर्दान तथा आशीर्वाद वाले लोगों की ज़रूरत नहीं है।"

उसने वासलीसा को द्वार के बाहर कर दिया और चमकदार आँखों वाला एक सिर बाड़े से उठा कर एक छड़ी में लगा कर वासलीसा को दे दिया और कहा "लो शायद इसी लिये तुम्हारी सौतेली बहनों ने तुम्हें भेजा है।"

चमकती आँखों वाला सिर लेकर वासलीसा घर गई। उसकी मां और बहनें उस सिर के प्रकाश में जल भुन गईं।

दूसरे दिन प्रातःकाल वासलीसा ने सिर को गाड़ दिया और घर बन्द करके दूसरे गाँव को चली गई।

गुड़िये ने उसके लिये एक चरखा तयार किया जिससे वासलीसा ने बहुत सुन्दर महीन सूत काता और बहुत पतला कपड़ा तयार करके राजा के पास भेजा। वह कपड़े का थान इतना पतला था कि सूत की भांति सुई के नाके से निकल सकता था। राजा ने उस कपड़े की कमीज बनवानी चाही परन्तु कोई न बना सका आखिर वह कपड़ा वासलीसा के पास भेजा गया। जब क़मीज़ें तयार होकर राजा के पास गईं तो राजा बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने वासलीसा को बुला भेजा।

वासलीसा की सुन्दरता देख राजा मोहित हो गया और उसने उससे ब्याह कर लिया। कुछ समय के पश्चात् उसका पिता लौटा और वह भी उसी के साथ रहने लगा। वासलीसा ने जन्म भर गुड़िये को अपने पास रक्खा।

देश दर्शन

मास्को

मास्को को बहुधा लोग पवित्र नगर कहते हैं। मास्को में बहुत से चर्च, गिरजाघर और मठ हैं। मास्को नगर प्राचीन तथा आधुनिक वस्तुओं का मिश्रित है। इस नगर के मध्य में एक किलेबन्द पहाड़ी और प्रसिद्ध क्रेम्लिन है। पहाड़ियों तथा उसकी तराइयों में सुन्दर भवन, वाटिकाएँ तथा कचहरियाँ हैं। मास्को का कोई भाग मरुस्थल की भांति उजाड़ तथा कोई भाग नगर की भाँति चहल पहल वाला है। किसी भाग का दृश्य तो एक ग़रीब गाँव की भाँति है और कोई भाग एक बड़े राजधानी की भाँति सजा है।

छोटी गलियों में लाल अथवा पीले लकड़ी के घर बने हैं। रूसी लोग गाय पालते हैं। प्रातःकाल गायें छोड़ दी जाती हैं। वह चरने के लिये बाहर जाती हैं। जब सभी गायें एकत्रित हो जाती हैं तो कोई भेड़ की खाल का वस्त्र पहने हुए मनुष्य उन्हें चराने के लिये ले जाता है। नगर के बाहर गायें चरने जाती हैं। संध्या समय वह फिर अपने अपने स्थानों को वापस



आ जाती हैं। यह गायें गलियों में होकर अपने रास्ते चली जाती हैं। किसी भी व्यक्ति को इन्हें छेड़ने की आज्ञा नहीं है।

चिताई गोरोड नामक स्थान के चारों ओर एक दीवार है। उसमें एक द्वार है। उसके देखने से अब भी प्रतीत होता है कि यह स्थान तातार लोगों के अधिकार में था। दीवार के बाहर उजाड़ तथा भीतर गुञ्जान है। भीतर बड़े बड़े बाज़ार हैं। दूकानें बड़ी तथा सुन्दर हैं। ऊपर रूसी नगरों के बड़े बाज़ार का शेष भाग है। बाज़ार का नया भाग बड़ा सुन्दर है। नये भाग को रोज़ कहते हैं। बाज़ार में दूकानदार और उसके लड़के लोगों को सामान खरीदने के लिये फुसलाते रहते हैं। वह अपने सामान का मूल्य बहुधा दुगुना कहा करते हैं। इसलिये यात्री को सावधानी के साथ मोल करना चाहिये। रूसी लोग संसार में सब से अधिक धोकेबाज़ व्यापारी होते हैं।

मास्को में एक चोरों का बाज़ार है। यह बाज़ार सरकार की आज्ञानुसार खुला है। बाज़ार में प्रत्येक भाँति की अद्भुत वस्तुएँ पाई जाती हैं। उस बाज़ार

को अवश्य देखना चाहिये परन्तु यात्री को चाहिये कि वह वहाँ सज धज कर तथा गहने आदि धारण करके न जावे। इस बाज़ार में पिटर के काल का मनुष्य का बना चेहरा मिलता है। रूस के राजा पिटर ने डाढ़ी रखवाने की मनाही कर दी थी और कर देने पर ही रूसी लोगों को डाढ़ी रखने की आज्ञा थी। मनुष्य के चेहरे का आकार डाढ़ीदार बना हुआ बिकता है। उस पर एक ओर लिखा रहता है कि डाढ़ी का रुपया चुकता कर दिया गया है।

क्रेम्लिन की दीवार के बाहर साधु विलियम का चर्च है। यह चर्च योरुप भर में सब से अद्‌भुत चर्च है। इस चर्च के अन्दर जितने पत्थर लगे हैं सभों में रंग विरंगे चित्र, साँप, अजगर, चिड़िया और बनैले पशुओं के बने हैं। इस चर्च को रूस के राजा इवान टेरिबुल ने बनवाया था। उसने कज़न में तातार लोगों के ऊपर जो विजय प्राप्त की थी उसी के फल स्वरूप यह चर्च बनाया गया था।

इस चर्च के सामने रेड स्क्वायर है। इसमें प्राचीन रूसी राजा अपनी घोषणा छापा करते थे। इसी स्थान



पर इवान ने बहुत लोगों की हत्या की थी और फाँसी दिलवाया था। जिस निर्दयता के साथ उसने लोगों की हत्याएँ की थीं उसका उदाहरण संसार में और दूसरा नहीं है।

नोवगोरोड उत्तरी रूस का प्राचीन व्यापारिक नगर था। वहाँ से इवान को एक हज़ार व्यक्ति रोज़ाना मारने को मिला करते थे। उस नगर के बड़े घंटे को इवान उठा लाया और उसे क्रेम्लिन दीवार के रेडीमेर द्वार के समीप लगाया। यह घंटा मास्को नगर को संकट के समय सूचना देता था। आखिरकार इस घंटे की धातु इवान वेलीकी के टावर के बड़े घंटे में प्रयोग कर दी गई।

इवान अपनी प्रजा की शरीर के लिये तनिक भी परवाह नहीं करता था। वह उनकी आत्मा की याद करता था। इसी लिये उसने सिरिल साधु का चर्च बनवाया था। इस चर्च में इवान का एक पत्र अब भी रक्खा है जिसमें इवान ने प्रार्थना की है कि उसके ३४७० हत्या किये हुए मनुष्यों की आत्मा के लिये प्रार्थना की जावे। इस पत्र में ६६० आदमियों के नाम दिये गये हैं।



रूस की राजधानी मास्को । क्रेमलिन

इवान दो मनुष्यों से डरता था। उनमें से सर जेरेमी टेलर अँग्रेज़ राजदूत था और दूसरा एक साधु था। जब सरजेरेमी टेलर इवान के सामने हैट लगा कर गया तो वह बड़ा कुपित हुआ और उसने उससे हैट लगाये रखने के सम्बन्ध में प्रश्न किया। राजदूत ने उत्तर दिया मैं इँगलैण्ड की रानी का राजदूत हूँ मेरी रानी सिर से हैट नहीं उतारती है। यदि उसके किसी मन्त्री या दूत को विदेश में किसी प्रकार का कष्ट मिलता है तो वह उसका बदला अवश्य चुकाती है।

इवान अपने जीवन काल भर अँग्रेज़ों का मित्र बना रहा उसने कभी किसी अँग्रेज को नहीं मरवाया। उसने महारानी एलिज़बेथ को लिखा था कि यदि मुझे एक उच्च श्रेणी की अँग्रेज़ महिला मिल जावे तो मैं अपनी सातवीं स्त्री को छोड़ सकता हूँ।

इवान बड़ा अंध विश्वासी भी था। जब विली नाम के मँगता साधु ने इवान को उसके पापों के कारण हाथ उठाकर बतलाया कि उसके ऊपर कष्ट आने वाला है तो वह बड़ा भयभीत हो गया। उसने सोना देकर साधु को प्रसन्न करना चाहा परन्तु साधु ने सोना फेंक दिया

और कहा उसके सोने से उसका हाथ जल जाता है क्योंकि सोने नरक से आया है। साधु ने इवान और उसके कैदी के मध्य अपना सिर रक्खा और कहा देखो तुम्हारे सींगें सिर से निकल रहो हैं। इवान यह सुन बहुत भयभीत हुआ। उस साधु का शरीर चर्च में गाड़ा गया और उसी के नाम पर चर्च का नाम पवित्र सेंट विलियम रक्खा गया।

रेडस्क्वायर के समीप ही मिनिम बूचर की शिल्प मूर्तियां हैं। इसी के समीप रिडीमर का द्वार है। इस सुन्दर द्वार पर पहुँचने पर प्रत्येक व्यक्ति को सिर नंगा करना पड़ता है। यदि कोई भूल जाता है तो पास वाला व्यक्ति उसे फिर से टोप उतारने की याद शीघ्र ही दिला देता है। द्वार के ऊपर टावर में रिडीमर का चित्र है जिसे रूसी लोग बड़ा आदर करते हैं। इस टावर के नीचे एक मनुष्य चिराग़ जलाये बैठा रहता है और वह मोमबत्ती बेचा करता है। लोग मोमबत्ती खरीद कर रिडीमर के चित्र के सामने जलाते हैं। वह मनुष्य भाँति भाँति की प्राचीन कहानियाँ सुनाया करते हैं।

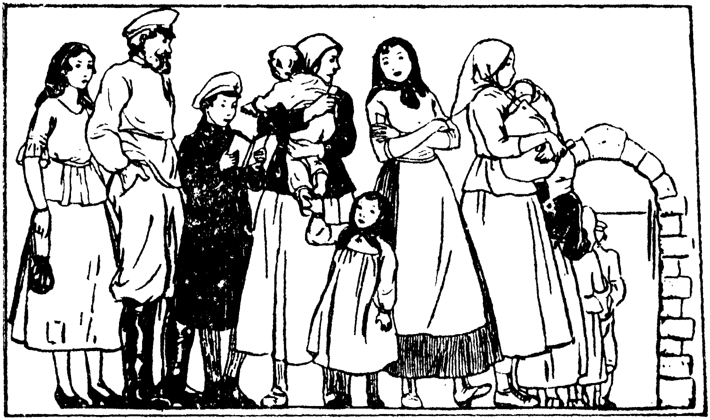


मास्को नगर में ९ केथिड्रल (बड़े गिरजा घर) हैं। ज़ार लोगों का व्याह अननसियेशन गिरजा घर में, अज़म्शन गिरजाघर में और आर्केंजेल गिरजाघर में देहावासन किया जाता था। पिटर ग्रेट के समय से राजाओं की मृतक शरीर के गाड़ने का स्थान लैनिनग्राड बदल दिया गया है। अजम्शन गिरजाघर में वह स्थान बना है जहाँ पर नैपोलियन १८१२ ई० में सोया था जब उसने मास्को पर विजय प्राप्त की थी। इवान विली की मूर्ति के बगल में बड़ी बड़ी तोपें रक्खी हैं। वहां के तोपखाने में भांति भांति की तोपें रक्खी हैं।

क्रेम्लिन से चल कर रेडफ्रेस और फिर पहाड़ी के नीचे संडेगेट (रविवार द्वार) है। यहां पर एक छोटा गिरजाघर है जहां पर छोटे बड़े सभी रूसी लोग थोड़ी देर के लिये रुकते हैं। यह आइवेरियन मदर के आराम करने का स्थान था। यह महिला अपने जादू तथा अद्भुत कार्यों के लिये प्रसिद्ध थी।

उसकी वहां पर मूर्ति है। उसके सिर पर मोती की माला और चेहरे पर हीरे हैं। सभी राष्ट्रों के लोग इसका दर्शन करने जाते हैं। धनी, निर्धन, व्यापारी, किसान,

अच्छे, बीमार और बड़े सरकारी अफ़सर सभी मूर्ति के दर्शन को जाया करते हैं।



रूस के कुछ स्त्री-पुरुष

रोगी लोग यदि चाहते हैं तो गाड़ी पर लाद कर उसके चित्र को अपने घर ले जाते हैं। गाड़ी चलाने वाले को गाड़ी चलाते समय सिर नंगा रखना पड़ता है। कभी कभी तो दर्शन करने वालों को इतनी भीड़ रहती है कि दर्शन करना भी दुर्लभ हो जाता है।



आधुनिक रूस

१६१७ ई० के पश्चात् से रूस के जीवन संस्कार तथा देश में जितना परिवर्तन हुआ है। उतना परिवर्तन किसी भी देश में नहीं हुआ है। यह देखकर बड़ा विस्मय होता है कि रूसी लोग जो अपने ज़ार राजा के इतने बड़े प्रेमी तथा पुजारी थे वह किस प्रकार सोवियट हो गये।

पहले रूस की ग़रीब प्रजा गुलाम थी और जहां पर वह काम करती थी वहां से अपने घर को भी नहीं जा सकती थी। उसे स्वतंत्रता बिलकुल प्राप्त न थी।

ज़ार अलिक्ज़ण्डर द्वितीय १८५५ ई० में गद्दी पर बैठा और उसने १८८१ ई० तक राज्य किया। उसने अपनी प्रजा के सुख के लिये बड़ा काम किया। उसने गरीबों को गुलामी से छुड़ाया और उन्हें भूमि दिया। उन्हें सब के साथ काम करने की भी आज्ञा प्राप्त हो गई।

लैनिन ग्राड से जो स्थान दूर थे। वहाँ का प्रबन्ध वहां की स्थानीय सभा के अधिकार में दे दिया गया। प्रान्तों में प्रान्तीय कौंसिल नगर में नागरिक कौंसिल

और गाँवों में गाँव की कौंसिलें बन गईं। इन्हीं के द्वारा



काकेशश के तेल-प्रदेश का एक दृश्य





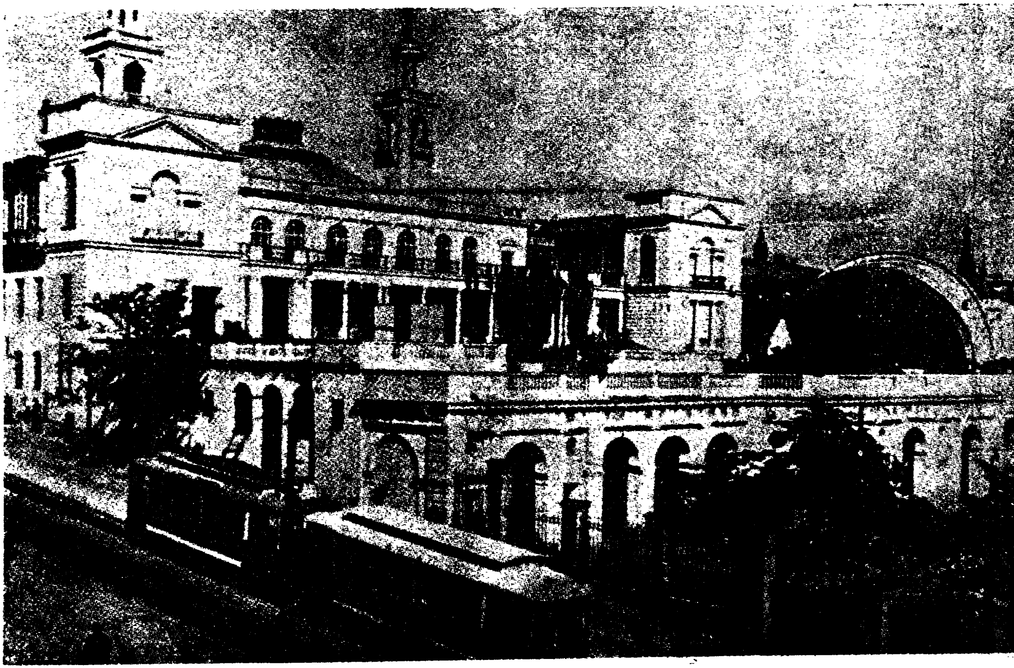
बाकू के एक कारखाने का दृश्य।

राज्य प्रबन्ध होता था। अलिक्ज़ण्डर ने कचहरियों का भी सुधार किया जिससे अधिक न्याय होने लगा। पत्रों को स्वतंत्रता प्रदान की गई। लड़कों की शिक्षा के लिये स्कूल खोले गये।

शिक्षा के प्रचलित होने से लोग निजी क्रान्तिकारी दल स्थापित करने लगे। समाजवाद की दीक्षा रूसी लोगों को दी जाने लगी।

क्रान्तिकारी लोग प्रत्येक स्थान पर घूमे और समाज-वाद का प्रचार लोगों के मध्य किया। उनके लिये समाज वाद ही उन्नति तथा धनी बनने के लिये एक मार्ग दिखाई पड़ा था।

क्रान्तिकारी नेता पकड़े गये। उन्हें कारागार में डाला गया, सजायें दी गईं और बहुतेरे देश से निकाल दिये गये। कभी कभी देश से निकालने का दंड बिना ठीक ठीक न्याय किये ही दे दिया जाता था इस कारण रूसी अप्रसन्न हो गये। इसी कारण क्रान्तिकारी लोग बलवा करने तथा सरकारी अफ़सरों की हत्या करने लगे उन्होंने अपनी एक गुप्त संस्था बनाई जो उन लोगों को



मिट्टी के तेल के प्रधान नगर बाकू का एक दृश्य

मारती थी जो बड़े सरकारी अफ़सर थे और जिससे उनकी संस्था घृणा की दृष्टि से देखती थी।

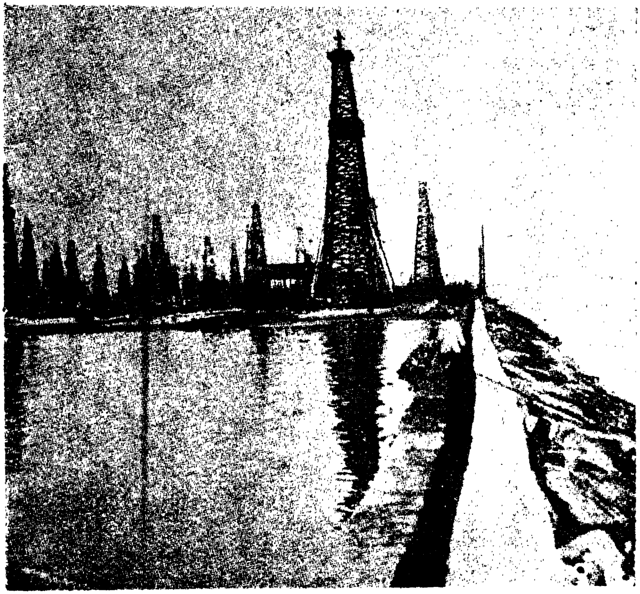
वह पुलिस के गुप्त विभाग से घृणा करते थे। इस लिये उन्होंने पहले पहल उसके प्रधान अफ़सर की हत्या कर डाली। जार को मारने के लिये भी बड़ा प्रयत्न किया गया। आखिरकार १८८१ ई० में विण्टर महल में वह एक बम के धड़ाके से मारा गया। उसी दिन ज़ार ने समस्त रूस की सरकार सुधार करने के लिये अपने हस्ताक्षर किये थे।

अलिक्जण्डर तृतीय ने इस घटना के कारण सुधार नहीं किया वरन् जो अधिकार दिये गये थे उन्हें भी छीन लिया। जमींदारों को कचहरी करने की आज्ञा दे दी वह किसानों और गरीबों को बिना कचहरी के ही सजा दे सकते थे।

गरीबों के बच्चे पार्कों तथा खेलने के मैदानों से निकाल बाहर किये जाते थे और खेल नहीं सकते थे। प्रजा रूसी सरकार से बड़ी असन्तुष्ट थी।

१९०५ ई० में ड्यूमा (कामन सभा) की बैठक हुई। ज़ार के मन्त्रियों ने उसे पसन्द नहीं किया और ज़ार

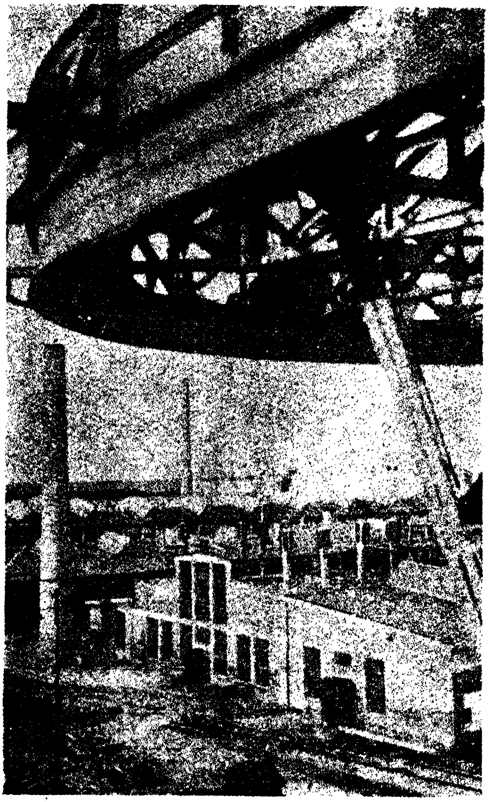
को सदैव सलाह दिया करते थे कि जब कभी भी ड्यूमा राजनैतिक कैदियों के बारे में या अपने सम्बन्ध में प्रश्न करे सभा को भंग कर दिया जावे। इस प्रकार विप्लव



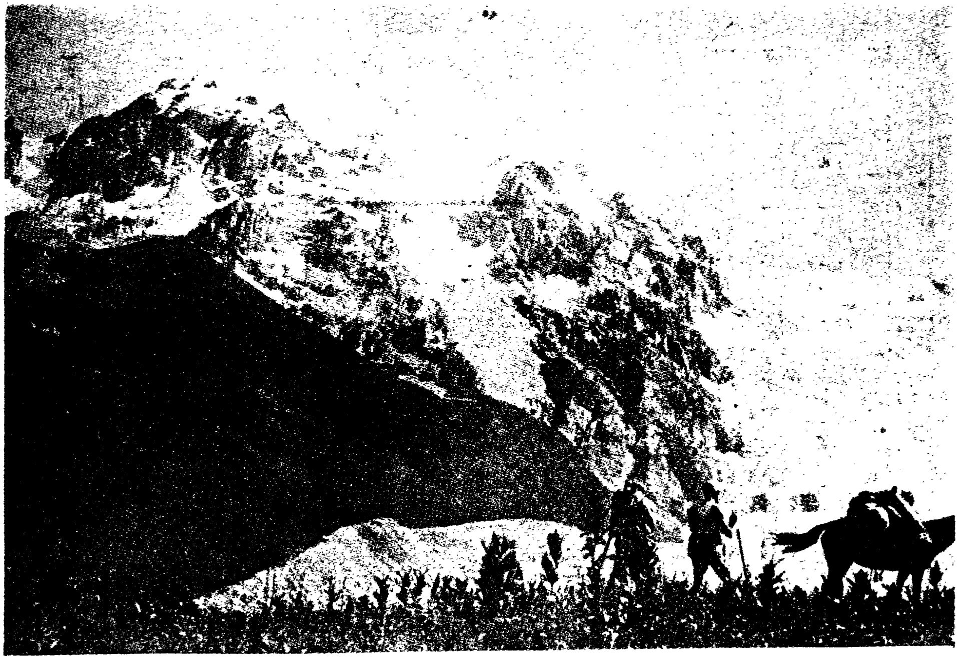
बीबी अल्बात जहां पहले समुद्र तल था वहीं आजकल मिट्टी का तेल निकालने के लिये नये यन्त्र लगाये जा रहे हैं।

दमन, हत्या और देश निकाले के नाटक में रूस की राजनैतिक स्थिति चलती रही। रूस का ज़ार गरीब

प्रजा की तनिक भी परवाह नहीं करता था और



डान नदी के किनारे पर बसे हुये रोस्टोव नगर के कृषि-यन्त्र बनाने का एक कारखाना।



हिमागारों और चरागाहों से ढके हुये काकेशस पर्वत का एक दृश्य

निरपराधियों को कठोर से कठोर दण्ड देता था तथा उन्हें साइबेरिया के शीत प्रदेश में भेज देता था।

१९१४ ई० में प्रथम महासमर छिड़ा। उसी काल में रसपूटिन नामक व्यक्ति रूस में बड़ा प्रसिद्ध हो गया। वह अपने को पुजारी कहता था और शरीर चोट तथा बाधाओं को अच्छा करने का बहाना करता था। रूस की महारानी पर उसका बड़ा प्रभाव हो गया उसका प्रभाव इतना बढ़ा कि उसके कहने पर बहुत से लोग रूस की सरकार के बड़े बड़े पदों पर नियुक्त कर दिये गये। उनमें बहुत से अज्ञान तथा बेवकूफ भी थे। युद्ध काल में उनका शासन प्रबन्ध इतना गड़बड़ हो गया कि रूसी सैनिकों को लड़ने के लिये अस्त्र भी ठीक तौर पर नहीं पहुंच सके और उन्हें जर्मन सेना के सामने कई हार स्वीकार करनी पड़ी। इतनी गड़बड़ी विराजमान हो गई थी कि रूस के एक भाग से दूसरे भाग को भोजन सामग्री भी नहीं भेजी जा सकती थी।

१९१६ ई० में ज़ार के किसी समीपवर्ती सम्बन्धी ने रसपूटिन की हत्या कर डाली।

१९१७ ई० के आरम्भ में रूस में भीषण शीतकाल

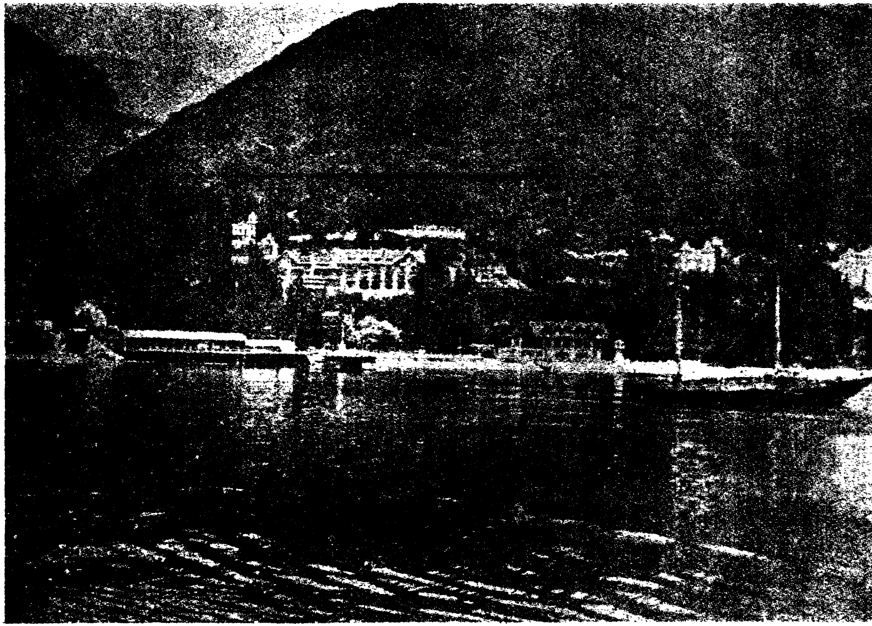


कुर नदी के किनारे पर बसे हुये टिफलिस नगर का एक दृश्य । यही नगर जार्जिया की राजधानी है ।

पड़ा। सेन्ट पिटर्सबर्ग अथवा लैनिनग्राड में भोजन मिलना कठिन हो गया। वहां कोयले की भी बड़ी कमी हो गई, स्त्रियां और बच्चे भूक के कारण चिल्ला चिल्ला कर मरने लगे। भोजन के सम्बन्ध में मार्च १६१७ ई० में रूस में बलवा होने लगा। सैनिकों ने अपने अफसरों को गोली मार दिया और बलवाइयों के साथ हो गये। सभी सैनिक विप्लव वादियों से मिल गये। केवल कुछ सैनिक भक्त बने रहे।

विप्लवकारी समाज ने कचहरियों में आग लगा दिया। पुलिस के गुप्त विभाग में भी आग लगा दी गई और समस्त पत्रों को सड़क पर जला दिया गया। पुलिस के गुप्त विभाग में प्रत्येक मनुष्य का पूरा व्योरा था वह सब जला दिया गया।

ज़ार के मन्त्रियों ने ड्यूमा को भंग करने का यत्न किया परन्तु वह डटी रही और उसने शान्ति स्थापित करने तथा शासन चलाने का प्रयत्न किया। बहुत से सरकारी अफ़सर पकड़ लिये गये। प्रान्तों में ड्यूमा ने जो सरकारें स्थापित की थीं वह बनी रहीं और वहाँ पर



कालासागर-तट पेड़ों को उगाने के लिये काफी गरम है। यह उसी तट का एक दृश्य है।

सैनिक तथा मज़दूर प्रतिनिधियों की सोवियट सभा स्थापित कर दी गई ।

सोवियट के सदस्यों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती गई । मज़दूरों ने कारखानों को छोड़ दिया वह दुगुनी वेतन मांगते थे । मज़दूर लोग सभाएँ करने तथा प्रस्ताव पास करने लगे ।

मार्च के मध्य में डयूमा ने ज़ार से स्तीफा देने के लिये कहा और समस्त ज़ार कुटुम्ब को महल में कैद कर दिया उसके बाद उन्हें अगस्त में टोबोल्स्क पहुँचा दिया ।

रूस विधान बनाने के लिये नैशनल कांस्टिट्वेण्ट एसेम्बली के बुलाने के सम्बन्ध में वादाविवाद होता रहा । उसी बीच जितने लोगों को देशनिकाले का दण्ड मिला था वह रूस वापस पहुंच गये ।

देश निकाले वालों में लैनिन भी था लैनिन को जर्मनी ने सहायता दिया क्योंकि वह रूस में गृहयुद्ध कराना चाहते थे । ऐसा होने से वे पूर्व की ओर से निर्भय हो जाते और पश्चिम की ओर वह फ्रान्सीसी तथा ब्रिटिश सेना पर आक्रमण कर सकते ।

केरेन्सकी जैसे लोग उस समय अग्रकर्ता थे। यह लोग बातें तो अधिक करते थे परन्तु काम कम करते थे। जब कि वह लोग लैनिन और उसके विप्लवकारी साथियों से वादाविवाद कर रहे थे उसी समय ट्राटस्की आदि ने सेना में विद्रोह करा दिया।



१२—जार्जिया का एक बीला

शीघ्र ही विद्रोहियों का अधिकार सोवियटों पर हो गया। नवम्बर १६१७ ई० में उन्होंने प्रावीज़नल सरकार पर एकाएक आक्रमण किया। उस समय रूस की सरकार की बैठक विंटर पैलेस में थी। विद्रोहियों ने अपने हाथ में शक्ति ले लिया।

यहाँ बोल्शेविक सरकार ने पत्रों पर रोक लगा दी भूतपूर्व मन्त्रियों में से कितनों को फांसी पर लटका दिया। कुछ समय में कुछ बोल्शेविकों ने जार, उसके पुत्र और पुत्री रानी की हत्या कर डाली।

बोल्शेविक लोग मध्यम श्रेणी वालों से बहुत घृणा करते थे। वह उन्हें सत्यानाश कर डालना चाहते थे। वह लोग मज़दूर, किसान और ग़रीब लोगों को उत्साहित करते थे। वह गरीबों और निर्धनों को उन्नतशील बनाना चाहते थे, उनकी स्थिति बदलना चाहते थे।

मज़दूरों ने नगरों के कारखानों पर अधिकार कर लिया जिसका परिणाम यह हुआ कि रूस के सभी कारखाने बन्द हो गये। किसानों ने ज़मींदारों की भूमि छीन लिया और बहुतों को मार डाला। गरीब किसानों ने धनी किसानों को लूट लिया।

कम्यूनिस्ट लोगों ने नगर के मजदूरों के लिये अनाज किसानों से छीन लिया। किसान नाज के छीने जाने से खेती कम बोने लगे। बीज के छिन जाने से



कालासागर के किनारे बटूम नाम का बनस्पति उद्यान
(बॉटेनीकल गार्डन)

भी खेती में कमी हो गई, साथ ही साथ वर्षा भी कम हुई। इसलिये समस्त रूस में काल पड़ गया।

रूस में १२ करोड़ किसान हैं। कम्यूनिस्ट नीति के अनुसार किसानों का चलना कठिन देख कर बोलशेविक सरकार ने अपनी नीति बदल दिया और किसानों से कहा कि वह अपना पैदा किया नाज स्वयम् बेच सकते हैं। उन लोगों ने चतुर तथा परिश्रमी किसानों से दूसरे किसानों को नौकर रखकर अधिक खेती करने के लिये उत्साहित किया।

१९२२ ई० में वाल्गा की घाटी में अमरीका ने बीज बोने के लिये भेजा। भोजन न मिलने से रूसी लोग बड़े निर्बल तथा दुबले हो गये थे।

नगरों में भी स्थिति बदल गई। मजदूरों को कम्यूनिस्ट अफसरों की आज्ञा माननी पड़ती थी। चेका (बोल्शेविक गुप्त पुलीस) उनके पीछे लगी रहने लगी। रेस्टोरेण्टों में उन्हें ८ व्यक्ति से अधिक बैठने की आज्ञा न थी। सभायें तथा जुलूस बन्द कर दिये गये।

लैनिन ने अपनी नीति में बहुत परिवर्तन किया जिस से मज़दूर तथा किसान की दशा सुधरने लगी।

प्रथम और द्वितीय पञ्चवर्षीय योजना के कारण रूस की स्थिति बहुत सुधर गई। आज रूस संसार के बड़े तथा धनी राष्ट्रों में है। वर्तमान महासमर में उसने जर्मनी की ओर रुख पकड़ा है। पोलैंड को तो उसने आधा बांट लिया है। रूस की सामाजिक अवस्था इस समय बहुत अच्छी है। वहां के किसान, व्यापारी, मज़दूर सभी सुखी हैं। वह दिन प्रति दिन उन्नति कर रहा है।



देश दर्शन

मेरी रूस यात्रा

जब मैंने योरुप की यात्रा का कार्यक्रम बनाया तो मुझे आशा न थी कि मैं रूस जा सकूँगा। लेकिन बर्लिन में रूस की इन्टूरिस्ट कम्पनी के संचालक से मिलने पर मालूम हुआ कि रूस का पहुँचना कठिन नहीं है। केवल फिनलैण्ड का पासपोर्ट होना जरूरी है। रूसी सरकार की आज्ञा फिनलैंड के रूसी राजदूत के पास हेल्सिकी में पहुंचाने का भार इस सज्जन ने ले लिया। साधारण पत्र व्यवहार में सम्भवतः अधिक समय लगे इसलिये मैंने उचित समझा कि यह कार्य तार द्वारा तय कर लिया जावे। इसके लिये तार के खर्च का भार भी मैंने अपने ऊपर ले लिया। रूस में यात्रा करने के लिये जो टिकट लेनी पड़ी उसमें न केवल रेल का किराया वरन् होटल में ठहरने, भोजन, लारी, पथप्रदर्शक आदि के सभी खर्च शामिल थे।

पासपोर्ट मिलने में अक्सर अधिक समय लगता है। हिन्दुस्तान में मुझे इसका कड़ुवा अनुभव हो चुका था। १९२५ में पहली बार मैंने बरमा, स्याम, मलय प्रायद्वीप



जावा आदि प्रदेशों की सैर करने के लिये आयोजन किया था। मुझे विश्वास दिलाया गया था कि यह पास शीघ्र ही मेरे बरमा के पते से भेज दिया जायगा। लेकिन मैंने सारे बरमा की यात्रा समाप्त करके जब पता लगाया तो वहां मेरे नाम कोई पासपोर्ट न था। विवश होकर मैं हिन्दुस्तान लौट आया। इसी से मैंने बीच के समय को डेन्मार्क, स्वीडन, नार्वे, इँगलैंड, आयरलैंड आदि की यात्रा में लगाया। इँगलैंड में ही मैंने फिनलैंड और इरानका विज़ा भी अपने पासपोर्ट में ले लिया। फिन-लैंड पहुँचने पर मुझे मालूम हुआ कि वहां मेरे लिये तार द्वारा आज्ञा बहुत पहले आ चुकी थी। अतः फिनलैंड की यात्रा समाप्त करके मैंने रूस के लिये प्रस्थान किया। आरम्भ में रूस के विरुद्ध बहुत सी बातें मेरे कान में डाली गई थीं। कुछ लोग कहते थे कि रूसी लोग यात्रियों का रुपया छीन लेते हैं। मैंने समूचे रूस की टिकट तो ले ही ली थी। रूसी हद के बाहर के खर्च और तेहरान पहुंचने के लिये अपने पास केवल एक पौंड छोड़ रक्खा था। लेकिन यह सब खबरें झूठी निकलीं। हां इतना अवश्य है कि रूस में प्रवेश करते

समय यात्री के पास जितना रुपया होता है वह लिख लिया जाता है और रूस छोड़ने समय फिर उस रक़म की जांच की जाती है।

मैंने दिन की गाड़ी से हेल्सिंकी से प्रस्थान किया। यह गाड़ी फिनलैंड की सीमा के पास संध्या को ठहर गई। उस समय वहां से कोई गाड़ी रूस को नहीं जाती थी। सीमा के पास कोई होटल न था। स्टेशन बहुत छोटा था। वहां केवल एक छोटी दुकान थी जो सिपाहियों के काम की साधारण चीजें रखती थी। जो बिस्तर योरुप की यात्रा में प्रायः बँधा ही पड़ा रहा वह यहां रूस और फिनलैण्ड की सीमा पर बड़ा काम आया।

दूसरे दिन शौचादि से निवृत्त होने पर कुछ समय पड़ोस के ठंडे और भीगे प्रदेश को देखने में बिताया। फिर गाड़ी छूटने के समय पर सामान रूसी चुंगी घर के सामने रक्खा गया। यह घर साधारण था। इसमें बड़े दफ्तरों की शान और भीषणता की गन्ध न थी। हां इसमें एक ओर हँसिया और हथौड़ा का झंडा और दूसरी ओर लेनिन का चित्र था। कर्मचारी साधारण

लोगों की भांति थे। उनमें रूखापन या रोब न था। फिर भी उन्होंने सामान पासपोर्ट और चेक आदि जांचने का अपना कर्तव्य भली भांति पालन किया।

फिन की सीमा को छोड़ कर रूस में प्रवेश करते समय प्रायः निर्जन प्रदेश मिलता है। इसमें ठंडे प्रदेश के छोटे छोटे पेड़ हैं। पेड़ इतनी दूर दूर हैं कि इसे घना बन नहीं कह सकते। इसी तरह के प्रदेश में कुछ घंटों की यात्रा के बाद लेनिनग्रेड नगर आ गया। स्टेशन बड़ा आलीशान है। मेरे साथ ही अमरीका के डेली मिरर के सम्पादक और अमरीका से आये हुये आर्थिक मिशन के सदस्य यात्रा कर रहे थे। हम लोगों के आने की सूचना यहां पहले ही पहुँच गई थी। रेलगाड़ी के डब्बे में ही हम लोगों के पास होटल के रूसी कर्मचारी आ गये। ये लोग फ्रेंच, जर्मन, इँगलिश आदि कई भाषायें जानते थे। जो यात्री योरुप की जिस भाषा का जानने वाला होता है उससे वे उसी भाषा में बात करते हैं। इन्होंने कहा कि आप लोग केवल अपना अपना सामान बतला दीजिये। सामान के लिये न ठहरिये। इन लोगों को अपना अपना सामान बतला

कर हम लोग मोटर पर सवार होकर होटल में आ गये। प्रत्येक यात्री को अलग अलग कमरा मिल गया। कमरे के पास ही मल मूत्र साफ करने का स्थान था लेकिन सफाई ऐसी थी कि गन्ध का नाम न था। कुछ ही समय में प्रत्येक यात्रा का सामान उसके कमरे में आ गया। कौन यात्री किस नम्बर के कमरे में ठहरेगा इसका निश्चय सम्भवतः पहले ही कर लिया गया था। वही नम्बर सामान के बंडलों पर लगाकर और बंडलों की संख्या स्टेशन पर ही डाल दी गई थी।

जलपान करने और थोड़ी देर आराम करने के बाद यात्रियों को शहर की सैर कराने के लिये मोटर-लारी आ गई साथ में बहुत भाषा भाषी पथ प्रदर्शक थे। एडमिरेलटी (जल-सेना) भवन, विण्टर (शीतकालीन) महल आदि ऐसे शानदार थे कि रूस का यह नगर योरुप के किसी नगर से टक्कर ले सकता है।

लेनिन ग्रेड के विशाल भवनों को देखने में कई दिन लगाये जा सकते हैं। यहां की चौड़ी सड़कों पर जो ट्रैमगाड़ियाँ चलती थीं उनके चलाने का काम अक्सर रूसी स्त्रियां करती थीं। बन्दरगाह पर तरह तरह के

जहाज थे। लेकिन मैंने हिमविध्वंसक या बरफ तोड़ने वाला पहले पहल यहीं देखा। यह देखने में बहुत भद्दा मालूम होता था। इसमें विशेषता यह होती है कि यह साधारण जहाजों से अधिक भारी होता है। ज्योंही यह समुद्री बरफ पर चढ़ता है त्योंही वे बरफ की तहें इसके बोझ से टूट जाती हैं और नीचे का पानी निकल आता है। इससे इसे कुछ आगे बढ़ने के लिये जल-मार्ग मिल जाता है। रूस के अधिकांश तट हिमाच्छादित हैं इसलिये रूस के लिये इस प्रकार के हिमविध्वंसक जहाज बड़े उपयोगी होते हैं।

लेनिन ग्रेड से मास्को की यात्रा कुछ अधिक मनोहर थी। प्रायः समतल होने पर भी दृश्य कई तरह के थे। स्टेशन से होटल में पहुँचने की उसी तरह की सुविधा थी।

मास्को के अजायबघर योरुप भर में प्रसिद्ध हैं। उनके द्वारा रूस के कम पढ़े हुये लोगों को बड़ी शिक्षा दी जाती है। अपने यहाँ कलकत्ते और बम्बई के अजायबघरों में पहले तो देहाती लोग पहुँच नहीं पाते हैं यदि वे किसी तरह वहां पहुँच भी गये तो यूँ ही चक्कर लगा

कर लौट आते हैं। रूस के अजायबघरों में देहाती दर्शकों की छोटी छोटी टोलियां कर ली जाती हैं प्रत्येक टोली के साथ अजायबघर की चीज़ों को समझाने के लिये एक एक शिक्षित रूसी रहता है।

ज़ार के समय में रूसी लोग अमीरों के अत्याचार और पादरियों के ढोंग से इतने तंग आ गये थे कि इस समय अजायबघरों के द्वारा भी साम्यवाद का प्रचार किया जा रहा है। एक बड़े अजायबघर में घुसते ही ज़ार का सिंहासन दिखलाया गया है। हाथ में इँजील लिये हुये लम्बी दाढ़ी वाला पादरी और संगीन लिये हुये सिपाही इस सिंहासन को सम्हाले हुये हैं। सिंहासन के नीचे दबे हुये किसान से लोहू बह रहा है। पथ-प्रदर्शक ने बतलाया कि पहले ज़ार के अत्याचार से बेचारे क़िसान कुचले जा रहे थे। लेकिन उसकी फौजों के सामने वे कुछ नहीं कर सकते थे। उधर पादरी लोग ग़रीबों से कहते थे कि ज़ार ईश्वर का अंश है इस दुनिया में दुःख सह लो दूसरी दुनिया में तुम्हें आराम मिलेगा। लेकिन इस समय रूसी लोग पादरियों से कहते हैं कि इस दुनिया में हमें सुख से जीवन बिता लेने



दो दूसरी दुनिया में जो भोग विलास हों उन्हें तुम ले लेना।

रूसी लोग पादरियों के ढोंग से इतने तंग आ गये कि उन्होंने ईश्वर को ही अपने देश से अलग कर दिया। मेरा रूसी पथ-प्रदर्शक (गाइड) मुझसे कहता था कि तुम ईश्वर को मानते हो फिर भी तुम्हारे देश में लड़ाई झगड़ा, विदेशी शासन है। हमारे देश में ईश्वर का ढोंग नहीं है फिर भी हमारा प्रबन्ध कहीं अच्छा है। हमारे यहाँ गिरजाघरों को खाली घंटा बजाने के लिये नहीं रखते। उनमें हम (रूसी) लोगों ने अजायबघर, स्कूल, अस्पताल और पुस्तकालय खोल दिये हैं।

रूस के बाल-ग्रह सचमुच संसार में अनोखे हैं। एक एक संस्था में कई सौ रूसी बालक रहते हैं। वहाँ उनके भोजन, व्यायाम, खेल-कूद, पढ़ाई आदि का बड़ा अच्छा प्रबन्ध होता है। कुछ शिशु-भवन हैं जिनमें शिशुओं का भरण पोषण होता है।

मास्को का रेडस्क्वेर बड़ा विशाल है। लेनिन का मक़बरा है जो कभी नहीं भूला जा सकता है। यह बहुत ही सादा बना है। इसके भीतरी भाग में मसाला लगी

हुई लेनिन की लाश रक्खी हुई है। यहाँ हर रोज़ हज़ारों आदमी दर्शन के लिये जाते हैं लेकिन फिर भी यहां बड़ी शान्ति रहती है। एक एक को लाइन बढ़ती चली जाती है। जो मनुष्य पहले आता है वह आगे रहता है। बाद में आने वाला उसके पीछे रहता है। भीतर बिजली की रोशनी होती है और संगीन का पहरा रहता है।

मज़दूरों के महलों, संयुक्त खेतों, सरकारी दुकानों, खेल के स्टेडियम के बारे में लिखने के लिये बहुत स्थान चाहिये।

मास्को से बाकू की लम्बी यात्रा का वर्णन फिर कभी किया जायगा। बाकू से कास्पियन सागर को पार करके इरान, फारस और बलोचिस्तान के मार्ग से मैं हिन्दुस्तान लौट आया।